मौन

मैथिली कथा संग्रह

जगदीश प्रसाद मण्डल

मौन

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MAUN

A Collection of Maithili stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-73-5
दाम: 251/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)
पहिल संस्करण: 2024

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/, https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

प्रस्तुत पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण भाव

कुवृत्ति वृत्ति चित्र बनि-बनि
रूप समाज सजैए।
दृश्य-अदृश्य, अदृश्य दृष्टिक
रूप धार धारण करैए।
धरिते रूप धार धरिया
दृश्य महार सजैए।
धार-महार महैर-महि
रंग समाज चढ़ए लगैए।
चढ़िते रंग समाज संग
निखाइर रूप निरखैए।
परखनिहारो निखैर-परैख
गति-विधि समाज देखैए।
जेहने गति-विधि समाजक
तेहने शीलो-शूल बनैए।
मन मन्दिर बैस पुजारी
पूजा यज्ञक पूर्ति करैए।

•••

अनुक्रम

रौदीक दाही/06
की पेलौं/20
आमक गाछी/35
भुतलाएल जीवन/51
पीपरक गाछ/70
प्रतिष्ठा पानिमे गेल/84
शिवालय/94
सुखाइत जीवन/107
मौन/118
उनटा बसात/130

परिशिष्ट:

जगदीश प्रसाद मण्डलक पोथीक लोकार्पण विवरण: 141
जगदीश प्रसाद मण्डलपर केन्द्रित पोथी: 145
जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रकाशित कृति: 146

रौदीक दाही

आइ अनन्त चतुर्दशी छी। आइये अनन्तक पूजा हएत। अनन्तक पूजा कहियौ कि अनन्तक पाबैन कहियौ आकि भादवक शुक्ल पक्षक चतुर्दशी आ तैसंग 17 सितम्बर भेने विश्वकर्मा पूजा सेहो आइये छी। अनन्त पाबैनमे सामान्य रूपेँ लोक अपना बाँहिपर अनन्त[1] बान्है छैथ। ओना, अनन्त आ फनन्त दुनू तरहक डोरा होइए, जइमे अनन्तकेँ शुद्ध आ फनन्तकेँ अशुद्ध मानल जाइए। दुनू डोरामे अन्तर एकटा बन्हनक मात्र अछि। खाएर जे अछि, सियान-चेष्टगर अनन्त बान्है छैथ आ महिलो आ बच्चो फनन्त बान्है छैथ।

अपना अनन्त पाबैन नइ होइए। बहुतो पाबैन एहेन अछिए जे हिन्दू परिवारक रहितो सभकेँ नइ होइ छैन। जहिना आन-आनकेँ कएटा पाबैन नहि होइ छैन तहिना

[1] डोरासँ बनौल अनन्त

अपनो अनन्त, चौरचन, छठि आ घड़ी नइ होइए। ओना, आन-आन पाबैन सालमे एक दिन, माने निश्चित मासक निश्चित तिथिकेँ होइए मुदा किछु पाबैन एहेन अछि जे ओइसँ भिन्न सेहो अछिए। जेना, छठि पाबैन कातिक मासक शुक्ल पक्षक षष्टी-सप्तमी-के सेहो होइए आ चैत मासमे सेहो होइए, तहिना घड़ी पाबैन सेहो बुधो दिन-के होइए जेकरा 'बुधवारि घड़ी' कहै छिऐ आ शनि-के सेहो होइए जेका 'शनियाही घड़ी' कहै छिऐ। खाएर जे होइए, कहलो गेल अछि- 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'।

ओना, अनन्तक पाबैन अपना तँ नहियेँ होइए मुदा पावनिक दिन रहने आइ आन दिनक अपेक्षा अपनो अप्पन काजक छुट्टी मनैबिते छी। तँए आइ अनन्त पावनिक छुट्टी मनाएब अछिए। जे पाबैन अपना नइ होइए तइ पाबैन दिन रामलाल भाय ऐठाम चलि जाइ छी आ पावनिक आनन्द लइ छी। अनन्तक पूजा छी जे दिनक पहिलुके पहरमे हएत। सभ पावनिक अप्पन-अप्पन समय होइए। जेना छठि पाबैन षष्टीक साँझसँ शुरू होइए आ भोरमे, माने सप्तमीक भिनसरमे सम्पन्न होइए। तहिना चौरचन-घड़ी साँझू पहर-के होइए। कातिक मासमे लक्ष्मी पूजा अमावसियाक पहिल साँझमे

होइए आ काली पूजा निशाभाग रातिमे।

सबेरे, माने दिन उगिते अप्पन नित्य-कर्मसँ निवृत्त होइत, स्नान कए, चाह पीब रामलाल भाय ऐठाम विदा भेलौं।

रामलाल भाय पूजाक आसनपर बैस पूजा कऽ रहल छला आ अपनो अँगनाक धिया-पुता आ अड़ोस-पड़ोसक धिया-पुता सेहो चारूभरसँ बैस देखि रहल छल। संयोग एहेन भेल जे अपना पहुँचैसँ पहिने रामलाल भाय पूजाक अन्तिम चरणमे पहुँच चुकल रहैथ। पूजामे धियान लगौने रहैथ तँए ओ हमरा नहि देखलैन आ खूब जोरसँ शंख फूकलैन। शंखक आवाज सुनि अपनो मन कहलक जे पूजा सम्पन्न भऽ गेलैन। तैबीच रामलालो भाय शंख फूकि पूजापर सँ उठला आ हमहूँ दरबज्जापर पहुँचलौं कि हुनकर नजैर हमरापर पड़लैन। मुहसँ किछु नहि बजला, किए तँ हुनको बुझल छैन जे हमरा अनन्तक पाबैन नइ होइए। हाँइ-हाँइकऽ परसाद उठा बाँटए लगला। पछाइत दुनू गोरे, माने रामलालो भाय आ अपनो प्रसाद खेलौं।

अपना अनन्त पाबैन कहियासँ नइ होइए तेकर ठीक-ठीक ठेकान तँ नहि अछि। मुदा एते बुझल अछिए

जे पितोजी जाबे जीवित रहला ताबे हुनको अमलदारीमे ई पाबैन नइ होइ छल। हुनके देखा-देखी अपनो नइ करै छी।

अखन तक रामलाल भाय भिनसुरका चाह नइ पीने छला, तँए चाह पीबैले हुनकर मन छड़पटाइ छेलैन कि नहि से तँ अपने बुझैत हेता, मुदा पूजापर सँ उठला पछाइत पत्नी दू कप चाह नेने दरबज्जापर पहुँच गेलैन। दरबज्जेक ओसारपर रामलाल भाय पूजाक आसन बनौने छला। जेठकी बेटी सुनयना, दरबज्जापर आबि पूजाक सभ किछु समेट लेलक। दुनू भाँइ, माने अपनो आ रामलालो भाय, दरबज्जाक ओसारपर लगल कुरसीपर बैस चाह पीबए लगलौं। धियो-पुतो चलि गेल आ सुनयना सेहो पूजाक सभ वस्तु-जात उठा आँगन लऽ गेल।

बरखा नइ भेने समयक रूप-रंग, माने तापमानक हिसाबसँ जेठे-अखाढ़ जकाँ मौसम बुझि पड़ि रहल अछि। भिनसुरका समय रहितो देहसँ पसेना निकैलिये रहल अछि। चाह पीलाक बाद दुनू गोरे पान खेलौं। पानक पहिल पीत फेंकैत रामलाल भाय बजला-

“मोती, ऐबेर रौदी दाही भऽ गेल।”

रामलाल भाइक गप्पक अपना कोनो अर्थे ने लागल जे रामलाल भाय महाभारतक दृष्टिकूट जकाँ की बजला.! ओना, मने-मन हिसाब सेहो बैसबए चाहलौं, मुदा हिसाब नहियेँ बैसल जे रामलाल भाय की बजला। हिसाबो केना बइसैत? दाही तँ पनियार समयमे होइए, माने अधिक बरखा-बुन्नी भेने आकि बाढ़ि ऐने ने। से तँ भेल नहि अछि, तखन दाही केना भऽ गेल? आ तहिना रौदी तँ रौदी छी, जेकरा सुखार कहल जाइए। बजलौं- “कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

रामलाल भाय बुझि गेला। बजला-

“मोती, तोरा मनमे यएह ने होइ छह जे रौदियाह समय भेने फसिल जरि जाइए आ अधिक बरखा भेने वा बाढ़ि ऐने दहा जाइए?”

कहलयैन- “हँ।”

रामलाल भाय बजला-

“लोकक जे सामान्य दृष्टि अछि तइ अनुकूल ठीके अहिना होइए मुदा अप्पन तँ से नहि अछि।”

रामलाल भाइक विचार सुनि मनकेँ चारू भाग दौड़बए लगलौं, मुदा तैयो भाँज नहियेँ लागल जे

रामलाल भाइक पेटमे कोन विचार छैन। तँए बिनु किछु बजने रामलाल भाइक मुँह दिस ताकए लगलौं। रामलाल भाय अप्पन घरक दछिनवारि भाग दिस हाथक इशारासँ देखबैत बजला-

“मोती, दछिनवारी कात जे पच्चीस-छब्बीस बीघाक प्लॉट अछि तइमे अप्पन चारि बीघा जमीन अछि, से तँ तोरो बुझले छह?”

रामलाल भाइक खेत अपनो देखले अछि, बजलौं-

“हँ से तँ अछिए।”

रामलाल भाय बजला-

“देखिकऽ कहह जे एक्को गब धान पूरा प्लॉटमे केकरो भेल अछि?”

आँखिक सोझामे अछिए, बजलौं-

“हँ से तँ नहियेँ अछि।”

रामलाल भाय बजला-

“आब तोहीं बाजह, ई की भेल? एकरा दहाएल कहबहक आकि रौदीसँ जरल रौदियाएल?”

कोनो स्पष्ट विचार नजैरिक आगूमे रहैत तखन ने, से तँ छल नहि तँए किछु बाजिये ने भेल। ओना, रामलाल

भाइक चेहराक रंग सेहो उदास भइये गेल छैन, मुदा तैयो विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

“मोती, ओइ समुच्चा प्लॉटक चारूकात टोलो सभ अछि आ सड़को अछि। गामोक लोक आ टोलो सभक लोक एकरा ‘गोरहा’ जमीन कहै छैथ।”

‘गोरहा’ सुनि मन धकमकाएल। धकमकाएल ई जे गोरहा तँ गाए-महींसक गोबरसँ बनौल जाइए, खेत केना गोरहा हएत? बजलौं-

“नीक जकाँ नइ बुझलौं, भाय। कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

रामलाल भाय बजला-

“मोती, सामान्य जमीनसँ अधिक उपजाउबला जमीनकेँ लोक गोरहा कहै छैथ। अधिक उपजाउ जमीन ओ बनैए जइमे गाम-घरक बर्खाक पानि बहि-बहि जाइए। कम्मो बरखा भेने आ बेसियो बरखा भेने ओहासक रूप बना पानि जइ खेतमे जाइए ओ खेत सामान्य खेतक अपेक्षा अधिक उपजाउ बनि जाइए। तँए ओकरा लोक गोरहा कहै छैथ।”

रामलाल भाइक विचार मनक भककेँ छोड़ा देलक।

भक छुटिते बजलौं- “आब बुझि गेलौं, भाय।”

अप्पन विचारक समर्थन पेब आकि अप्पन मनक वेदना प्रकट होइत देखि रामलाल भाइक मन खुशियेलैन। खुशियाइते बजला-

“मोती, गामोक लोक आ जिनकर-जिनकर खेत ओइ प्लॉटमे छैन सेहो सभ, ओकरा अन्नक बखारी कहितो छैथ आ बुझितो छथिए। मुदा..?”

बजलौं- “की मुदा?”

रामलाल भाय बजला- “मुदा यएह जे ऐ साल लगा आठम साल छी। आठ सालसँ ओइ प्लॉटमे एक्को कनमा उपज नइ भेल अछि!”

ओना, आँखिक सोझामे ओइ प्लॉटक दशा एहेन अछिए मुदा तइ नजैरिये धियान नहि देने छेलौं, तँए रामलाल भाइक विचार धियानपर नहि आबि रहल छल। मुदा चुप्पे-चाप मने-मन विचारए लगलौं जे रामलाल भाय की कहए चाहि रहला अछि।

तैबीच रामलाल भाय बजला-

“मोती, धरतीक बनावट जे अपना ऐठामक अछि ओ उत्तर-सँ-दच्छिन दिशाक ढलान अछि। अखन गंगा-

ब्रह्मपुत्र मैदानक चर्च छोड़ह। अखन एतबे बुझह जे गाम-गामक जे बनावट अछि ओ उत्तर भाग ऊँचगर आ दच्छिन भाग नीचगर अछि।”

रामलाल भाइक विचार नीक जकाँ बुझिये ने रहल छेलौं, तँए बजलौं-

“भाय, कनी फरिछा कऽ कहियौ?”

हमर विचार सुनि रामलाल भाय मने-मन विचार करए लगला जे कोन हिसाबसँ बाजी जइसँ मोतीलाल नीक जकाँ बुझि जाए। ई नहि ने जे अपने अपना हिसाबसँ बाजी आ मोतीलाल अपना हिसाबसँ बुझए, तखन विचारक ताल-मेल केना बैसत। बजैक तँ माने भेल जे जे विचार जेना कहए चाहि रहल छी से विचार तहिना सुननिहारो बुझि जाइथ। रामलाल भाय बजला-

“मोती! अपना सबहक उत्तरमे नेपाल अछि। अपना सबहक माने मिथिलांचल कहक आकि बिहार, तेकर उत्तरमे नेपाल अछि। ओना, नेपाल पूबमे बिहारोसँ आगाँ बढ़ि बंगालक किछु भाग धरि अछि, तहिना पच्छिममे सेहो बिहारक सीमासँ आगू बढ़ि उत्तर प्रदेशक किछु भाग धरि सेहो अछिए। मुदा अखन एतबे बुझह जे अपना

सभसँ उत्तर नेपाल अछि। नेपालक उत्तरी भाग पहाड़सँ घेराएल अछि। छोट-पैघ, माने लम्बाइयोमे आ ऊँचाइयोमे, सइयो पहाड़ अछि। जइ पहाड़सँ नदी सभ निकैल दच्छिन-मुहेँ बहैत गंगामे जा कऽ मिलैए। एहेन नदी एक्के-दुइये टा नहि, दर्जनोसँ बेसी अछि। जइसँ धरती उत्तरसँ दच्छिन दिस ढलान भऽ गेल अछि।”

रामलाल भाइक विचार जेना मनमे स्पष्ट चित्र बना देलक, तँए बजलौं- “भाय, अहाँक विचार नीक जकाँ बुझि गेलौं जे उत्तरसँ अबैत नदीक धारा हौ आकि बर्खाक पाइनिक बहाउ, उत्तर-सँ-दच्छिन मुहेँक अछि।”

बिच्चेमे रामलाल भाय टोकैत बजला- “मोती, सोल्होअना एकरा अहिना नहि मानि लहक जे पाइनिक बहाउ, चाहे नदीक माध्यमेँ हुअए आकि जमीनक ऊपरे होइत बहए, उत्तरसँ दच्छिने मुहेँ बहत। पूबो मुहेँ केतौ बहैए, केतौ पच्छिमो मुहेँ बहैए आ केतौ दच्छिनसँ उत्तर मुहेँ सेहो बहैए। सुनबो केने हेबह आ देखबो तँ केनहि हेबह जे सुल्तानगंजमे गंगाक बहाउ उत्तर-मुहेँ भेल अछि। आगू चलि भलेँ पूब मुड़ि गेल अछि।”

बजलौं- “हँ, से तँ सुननहि टा नहि, देखबो केने छी।”

रामलाल भाय बजला- “गामो सभमे देखिते छहक जे कोनो गाममे उत्तरवरिया बाघ ऊँचगर अछि आ दछिनवरिया नीचगर आ कोनो गाममे उत्तरवरिया नीचगर अछि आ दछिनवरिया ऊँचगर, जइसँ दच्छिनक पानि उत्तर-मुहेँ बहैए। ई तँ भेल गाम-गामक धरतीक बनावट। अखन एकरा छोड़ह। अप्पन जे समस्या अछि अखन तइपर आबह।”

रामलाल भाइक विचार किछु नीको जकाँ बुझलौं, किछु अधखिज्जूओ जकाँ बुझलौं आ किछु नहियोँ बुझलौं, तँए मन अकछा रहल छल। बजलौं- “हँ-हँ, अखन आन-आन विचारकेँ छोड़ू। अप्पन जे विचार अछि अखैन बस तेतबेक चर्च करू।”

रामलाल भाय बजला- “पच्चीसो-छब्बीस बीघाक जे दछिनवरिया प्लॉट अछि तइमे आठ-नअ बर्खसँ एको कनमा उपज नहि भऽ सकल अछि, माने सभ साल दहा जाइए। ओना, पैछला साल तक किसान आशा बान्हि खेती करैत आबि रहल छला, मुदा खेतक उपजाक कोन बात जे साले-साल जे लगता[2] लगबैत एला सेहो घट्टे लगैत एलैन। ऐ बेर सभकियो खेती छोड़ि देलैन।

[2] फसिल लगबैक खर्च

समयक गति देखह जे ऐ बेर एकोटा तेहेन बरखा भेबे ने कएल जे फसिल दहाइत।”

बिच्चेमे बजलौं- “एना किए भेल अछि?”

रामलाल भाय बजला- “एना ऐ दुआरे भेल जे प्लॉटक पच्छिमसँ तँ पक्की सड़क रहबे करइ, बाँकी तीन भाग- उत्तर, पूब आ दछिनवारि भागमे पक्की सड़क नहि छल, जइसँ प्लॉटक पाइनिक बहाउ दच्छिन मुहेँ होइत रहै, जइसँ उपजामे कोनो अवधात नहि होइ छल, मुदा तीनू भाग जे पक्की सड़क बनल, तइमे पाइनिक बहाउक कोनो निकास नहि बनौल गेल, जइसँ बर्खाक पाइनिक जमाव हुअ लगल। तँए, साले-साल फसिल दहाए लगल। आशा-आशीपर पैछला साल तक किसान खेती करैत आबि रहल छला मुदा ऐबेर सभ ऐ दुआरे छोड़ि देलैन जे जखन साले-साल दहाइये रहल अछि तखन अहू बेर दहेबे करत। मुदा भेल तेकर विपरीत, ऐ बेर एकोटा तेहेन बरखा भेबे ने कएल, मुदा किसान सभक अप्पन मनक जे शंका छेलैन ओ रौदियाह समय रहितो दहाइक विचारमे खेतीए नइ केलैन। तँए एकरा रौदियेक दहार ने कहबह।”

पुछलयैन- “एना जे सड़क बनल, तइमे किसान

सभ सड़क बनौनिहार ठीकेदारकेँ किछु कहलखिन नहि?”

रामलाल भाय बजला- “मोती, अपनासभ बुझै छी जे राजनीति नेते[3] सभ टा करै छैथ मुदा बात तेतबे नइ अछि।”

बजलौं- “तखन?”

रामलाल भाय बजला-

“अस्सल नेतागिरी कुरसीपर बैसल अफसर-अफसरान कऽ रहल अछि। अनुमण्डलक जे इंजीनियर सड़कक इस्टीमेट बनौलक, ओ आन-आन ठीकेदारक अपेक्षा अप्पन ठीकेदारी बुझि नीक जकाँ बनौलक। इस्टीमेटमे पुल-पुलिया तँ पास करौलक मुदा जखन सड़क बनबए लगल तखन गामेक दू-चारिटा ताड़ी-दारू पिआककेँ पकैड़ अगुआ लेलक आ सभ पुल-पुलियाक स्कीमे खा गेल। आब तोहीं कहह जे गामक मुँह-दुब्बर किसानक की सस-बस चलत?”

बजलौं- “किसान सभकेँ न्यायालय ने जेबाक चाहिऐक।”

---

[3] राजनीतिक पार्टीक नेता

रामलाल भाय बजला- “मोती, साँपक मुँह साँप चाटैए। जँ आमजनकेँ न्याय भेटैत तँ एते अन्याय थोड़े होइत।”

बजलौं- “भाय, अस्सलमे किसान तेतेक सुधंग छैथ जे नीक जकाँ बुझियो ने रहला अछि।”

रामलाल भाय बजला- “बुझबो केना करता, आइये अनन्त पूजा कहक आकि अनन्त पावनिक दिन छी। शास्त्रीय दृष्टिकोणसँ एकरा अनन्त सुखक प्राप्ति वा अनन्त सुखकेँ पूजब मानल गेल अछि, मुदा सामान्यजन की करै छैथ? यएह ने जे अप्पन-अप्पन बाँहिपर डोराक बनौल अनन्त बान्हि लइ छैथ.!”

ओना, रामलाल भाइक विचारकेँ अपने नीक जकाँ बुझि नहि सकलौं, मुदा तैयो हूँहकारी दैत बजलौं- “हँ, से तँ सएह करै छैथ।”

❑

शब्द संख्या: 1872, तिथि: 18 सितम्बर 2024

की पेलौं

➢ ❄ ➢

काल्हि भादवक पूर्णिमा छल आ आइ पूर्णकाल छी। आइयेसँ लोक गयाक फल्गू नदीमे अप्पन पूर्वजक पिण्डदान करता आ गाम-गाममे जल-तर्पण सेहो शुरू हएत। रातिमे एक्को बेर नीन नइ भेल। से कहब जे समय गर्म रहने नीन नइ भेल, से बात नहि छल। चिन्तासँ नीन नहि भेल। ओना, रौदियाह समय भेने आ बिजली पंखा नहि रहने नीन नहि भेल, सेहो कहल जा सकैए। मुदा तइमे एकटा बात आरो अछि। ओ अछि जे जिनका बिजली पंखाक सुविधा छैन तिनका ने बिजलीक अभावमे पंखा नहि चलने नीन नहि हेतैन मुदा अपना तँ से अछिए नहि, तँए जे अछिए नहि तेकर दोखे की लगाएब?

अपना नीन नहि हेबाक कारण दोसर छल। कारण ई छल जे अपने किसान छी, किसानी अप्पन जीवन

अछि, सौंसे भादव बित गेल मुदा एकोटा बरखा झाड़िकऽ ऐ साल नहि भऽ सकल अछि जइसँ खेतक धान सभ आब सुइख रहल अछि। जहिना गाम-घरमे कहबी अछि जे ‘गर्भहि नाश’ तहिना धान सबहक दशा भऽ गेल अछि। आसिन चढ़ि गेल, गम्हराक समय आबि गेल, तैठाम धानक एहेन दशा अछि जे जेतबो रोपल गेल छल तहूमे कमियेँ आएल अछि, वृद्धिक कोनो सम्भावने नहि बनल।

अखन तक, माने जाबे तक भादव मासक दिन बाँकी छल ताबत धरि, अपनो आशा बनल छल जे ‘सौन-भादो’केँ लोक वर्षा रीतु मानै छैथ तँए अखनो जे समय बाँकी अछि तइमे जँ टुटिकऽ बरखा हएत तँ किछु-ने-किछु धान हेबे करत। मुदा से भेल नहि, तँए मनमे चिन्ता तेते बढ़ि गेल जे ओछाइनपर, रातिमे खेनाइ खेला-पिलाक बाद, जखन सुतैले ओछाइनपर पड़लौं कि अप्पन दिन-दुनियाँ मोन पड़ए लगल। किसान छी, अपना सबहक बिहारक कहियौ आकि मिथिलांचलक मुख्य फसल धान छी, जेकर भात बनैए, भात ऐठामक मुख्य भोजन छी। जखन मुख्ये भोजनक उपाय मेटा जाएत तखन खाएब की आ जीब केना? यएह चिन्ता

मनकेँ तेना पकैड़ लेलक जे नीन पड़ा गेल। एक तँ मनक चिन्ता दोसर, हवाक दरस नहि, तँए गरमीसँ भरि राति कछमछ-कछमछ करैत रहि गेलौं। ताड़क पंखा हौंकैत-हौंकैत दुनू हाथ दुखा जाए मुदा देहक जलन, शरीरक गर्मी कमबे ने करए। केता बेर ओछाइनपर सँ उठि-उठि सड़कपर टहलबो केलौं, मुदा बाहरक हवा तँ आरो बेसी गर्म बुझि पड़ै छल।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल मनमे उठल जे अपने टा एहेन स्थिति अछि आकि आनो-आनकेँ छैन? आँखिक सोझमे देखैत रही जे गामक-गाम, इलाकाक-इलाकाक सएह स्थिति अछि। एक सालक रौदी वा एक सालक दाही जीवनकेँ पाँच बरख पाछू धकेल दइए। माने ई जे जखन रौदी भेल तखन धाने टाक फसिल नहि, रब्बी-राइक उपज सेहो हालक (नमीक) दुआरे प्रभावित हएत। माने, रब्बी-राइ सेहो नइ उपजत। पोखैर-इनार तँ सहजे गाम-घरसँ मेटाइये गेल अछि आ जे बँचलो अछि सेहो मेटाइये रहल अछि। तहूमे तेहेन रौदी भऽ गेल अछि जे जेहो पोखैर-इनार बँचल अछि से सेहो सुखियो गेल आ कनीमनी जँ बँचलो अछि तँ ओहो सुखैयेक स्थितिमे पहुँच गेल अछि। पानि पीबैक जे साधन चापाकल अछि,

ओहो दम मारि रहल अछि। बरखा नहि भेने पानिक लेयर निच्चाँ उतैर गेल अछि जइसँ ओ अपने सुखा रहल अछि, तखन पानि की देत आ लोक पीअत की?

कछ-मछ करैत भरि राति बित गेल मुदा एक्को घन्टा नीनसँ सुति नहि पेलौं जइसँ मनो भारी लगि रहल अछि आ जेना आँखिमे मिरचाइ कियो रगैड़ देने हुअए तहिना आँखियो कड़ुआ रहल अछि। भोर होइत-होइत नव विचार मनमे जगल। नव विचार मनमे ई जगल जे परिवारमे अभिभावक रूपमे तँ अपने छी, बाँकी जे परिवारमे अछि ओ तँ अपने ऊपर आश्रित अछि। तैठाम जँ अपने चिन्तासँ जकैड़ जाइ तखन परिवारक दोसर-तेसर, माने परिवारजनक की स्थिति हएत? जानियेँ कऽ ते प्राकृतिक प्रकोप भेल अछि, तेकर निमरजना तँ अपने करए पड़त किने। से तँ ने कनलासँ हएत, ने हाथ-पर-हाथ दऽ बैसलासँ हएत आ ने माथ-कपार पीटलासँ हएत। मनुक्ख छी, बुधि-विवेक अछि। जे समय भऽ गेल अछि तेकर सामना केना करब, से तँ अपने ने विचार करए पड़त।

अनायास मनमे उठल जे अपने अप्पन कोनो रास्ता नहि देखि पेब रहल छी, मुदा गामो-समाज तँ गाम-

समाज छीहे। जखन सभक एक्के गति अछि तखन सभ ने अप्पन-अप्पन जीबैक बाट ताकि रहल हेता। फेर अपने मनमे उठल, जे सभक गति हेतैन सएह ने अपनो हएत। किछु फुरैत तखन ने किछु बात, माने जीबैक कोनो रास्ता भेटैत से तँ किछु फुरिये ने रहल अछि। अनायास मनमे आएल जे समाजक बीच पुरान कहबी अछि जे 'दस मीलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज'। मने-मन जखन समाज दिस तकलौं कि हितनाथ काका ठहकला। मनमे एकाएक विश्वास जगल जे अपना ऐठाम, माने मिथिलांचलमे, कोनो कि अहीबेर रौदी भेल अछि। आकि समय-समयपर अदौसँ रौदी होइत आबि रहल अछि। ऐ बेरक रौदी तँ साले भरिक भेल अछि। आन-आन सालक रौदी तँ दू-सलिया, तीन-सलिया, चरि-सलियाक अतिरिक्त बरहबर्खा रौदी तक भेल अछि। जे अपनो बुझल अछि आ अपने टा किए, अहूँकेँ बुझले हएत जे त्रेता युगमे बारह सालक रौदी भेल छल, जइ रौदीमे जनकजी अपने हाथे हर जोतलैन जइमे सीता सन कन्याक प्राप्ति भेलैन। सीता सन कन्या आ त्रेता सन युग, मनमे अबिते जेना हृदय शान्त भेल। हृदय शान्त होइते अखन तकक जे अप्पन मनक उद्विग्नता

छल, ओ धीरे-धीरे कमए लगल।

मनमे उठल जे अखन अप्पन उमेरे की भेल अछि। पचासम बरख चलि रहल अछि सएह ने, मुदा हितनाथ काका तँ अस्सी बरख पार कऽ चुकल छैथ। अपना जीवनमे जेतेक धक्का-पंजा रौदीक लगल अछि तइसँ बेसी तँ हुनका लगले हेतैन, तँए नीक हएत जे हुनके लग जा पुछिऐन जे 'काका, एहेन समयमे केना जीब?'। मन मानि गेल। बिना किछु आगू-पाछू तकने-हेरने हितनाथ कक्काक ऐठाम विदा भेलौं।

उमेर भेने हितनाथ काका आब केतौ बाहर नहियेँ जाइ छैथ। दरबज्जेपर छला। हुनका लगमे पहुँच बजलौं-

"काका, गोड़ लगै छी.!"

हितनाथ काका आसिरवाद देबे ने केलैन आ उनटे प्रश्ने पुछि देलैन-

"किमहर सुर्ज उगल गणेश जे एते दिनक पछाइत तोरासँ भेँट भेल अछि? आबह-आबह लगमे बैसह।"

हितनाथ कक्काक विचार सुनि मने-मन विचारलौं जे दोसर-तेसर गप-सप्प नइ करब। जँ से करए लगब तखन अनेरे दोसरे-तेसरे गप-सप्पमे लगि जाएब आ मूल

गप जे अछि ओ या तँ छुटि जाएत वा बिसैर जाएब। बजलौं-

“काका, की कहब! ‘गृह कारण नाना जंजाला’। परिवारक जंजालमे पड़ल रहै छी तँए किम्हरो जाइ-अबैक फुर्सत नइ भेटैए।”

हम्मर विचार सुनि आकि हितनाथ काका अपने मनक भाव-भूमिक अनुकूल, कोनो दोसर-तेसर बात नहि चला ओ बजला-

“गणेश, ऐ बेरक समय तँ बड़ दुर्काल बनि गेल अछि.!”

हितनाथ कक्काक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे भने हितनाथे काका अगुआ कऽ रौदीक विचार उठौलैन हेन। अप्पन दशा देखबैत बजलौं-

“काका, समय तँ तेहेन भऽ गेल अछि जे आगू जीबैक सभ आशा टुटि रहल अछि। की करब आ केना जीब से बुझिये ने पेब रहल छी।”

हम्मर विचारकेँ हल्लुक बनबैत आकि अप्पन मनक सान्त्वनाक जड़ि बनबैक खियालसँ, हितनाथ काका बजला- “गणेश, मनुक्खो मनुक्खे ने छी, लगले थोड़े

हारि मानि लेत। साधारण झूठकेँ सत् बनबैले हजारो झूठ गढ़निहार जे मनुक्ख अछि ओ लगले[4] थोड़े हारि मानि लेत। जहिना एक झूठकेँ सत् बनबैले हजारो झूठक सहारा मनुक्ख लइ छैथ तहिना ने एक मुसीबतक समाधान ले हजारो रास्ता तकिते छैथ।”

बजलौं-

“हँ, से तँ तकिते छैथ।”

मने-मन विचारि हितनाथ काका एकाएक बजला-

“गणेश! बीतल दिनक, माने भूतकालक जे विचार अछि ओ वर्तमानकालमे बेछप किए ने भऽ जाए, आ वर्तमान-कालक परिस्थितिक अनुकूल किए ने नव विचार जगि जाए, मुदा जहिना वर्तमानकालक विचारसँ वर्तमानकालक समस्याक समाधान भऽ सकैए तहिना भूतकालोक समाधान, माने समस्याक समाधान, सेहो कारगर अछिए।”

बजलौं-

“काका, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।”

हितनाथ काका चुप भऽ कनेकाल मने-मन

---

[4] एक्के मौसमक चपेटसँ

विचारलैन, पछाइत बजला-

“गणेश, एकरा एना बुझह जे ने भूतकालक विचारसँ सोल्होअना वर्तमानकाल चलत आ ने सोल्होअना वर्तमानकालेक विचारसँ चलत। दुनूक सहयोगसँ चलत।”

हितनाथ कक्काक विचारकेँ मानैत बजलौं-

“हँ, से तँ ठीके कहै छी।”

अप्पन विचारकेँ पाछू दिस, माने भूतकाल दिस मोड़ैत हितनाथ काका बजला-

“गणेश, युग-युगक इतिहासक चर्च अखन छोड़ह, जँ से चर्च करए लगबह तँ भूतक भूताहि गाछीमे वौआ जेबह, मुदा वर्तमान युगक जे अपना सबहक इतिहास रहल अछि, माने किसानी जीवनक आधुनिक इतिहास, तेकरा जानब तँ उपयोगी अछिए।”

बजलौं-

“हँ से तँ उपयोगिये टा किए, जीवनक लेल अनिवार्य सेहो अछि।”

हितनाथ काका बजला-

“अखन, मुगल-पैठान सबहक युगक चर्च छोड़ह,

अंगरेजी शासनक जे क्रिया-कलाप रहल अछि, अखन बस तेतबेक चर्च करै छिअह।”

हितनाथ कक्काक विचार अपनो मनमे जँचल तँए बजलौं-

“यएह नीक हएत।”

हितनाथ काका बजला-

“जइ समयमे गाँधीजी बिहार एला आ बिहारक किसानक स्थिति देखलैन, तइ समयमे बिहारक किसान अनेको समस्यासँ ग्रस्त छला जइसँ दिनानुदिन अवनतिक दिशामे बढ़ि रहल छला। किसानक स्थिति अत्यन्त दयनीय आ सोचनीय छल। ओना, अखन सभ तरहक स्थितिक चर्च करब सम्भव नहि अछि, किए तँ अखन ने ओतेक गप-सप्प करैक समय अछि आ ने सभ बात धियानेमे अछि। तँए जेना-जेना आगू गप-सप्प होइत रहत तेना-तेना गपो-सप्प बढ़ैत रहत।”

बजलौं-

“हँ, सएह नीक हएत।”

हितनाथ काका बजला-

“अपना ऐठाम, अखन शासन पद्धतिक चर्च नइ करै

छिअह, अखन किसानक जीवनसँ जुड़ल जे किसानी समस्या अछि, बस तेतबेक चर्च करै छिअ। अपना ऐठाम, माने अपना देशमे, जखन अंग्रेजी शासन विकसित रूप लेलक तँ नीलक खेती शुरू भेल। बेपारी सभ नीलक खेती करए लगला। नील बनबैक कोठी सेहो बनौलैन। किसानक जोतसिम जमीनक एक-तिहाइ जमीन सस्त मूल्यमे, माने कम दाममे दखल करब शुरू केलैन। माने, जँ अहाँकेँ तीन बीघा खेत अछि तइमे एक बीघामे नीलक पौधा लगाएब शुरू केलैन। नीलक खेतीमे जमीनक बेस उर्वरशक्तिक जरूरत होइए। एक बेरक खेती दू साल, तीन सालमे सम्पन्न होइए। ओ जमीनक उर्वरशक्तिकेँ तेते खींच लइए जे ओइ खेतमे आगू कोनो फसिल लगैक शक्ति नहि रहि जाइ छइ। तँए ओकरा छोड़ि, माने जइ खेतमे नीलक खेती भेल रहल तेकरा छोड़ि, दोसर हिस्सामे दोसर बेर खेती करै छल आ जइ खेतमे खेती सम्पन्न भेल रहै छल ओकरा छोड़ि देल जाइ छल, जेकरा किसान पुन: मेहनत कऽ उपज होइ-जोकर बनबै छला, यएह क्रम नीलहा बेपारीक रहल।”

हितनाथ कक्काक विचार सुनि जेना भक्क खुजल तहिना भेल। बजलौं- “काका! अखन तक जे बात

नीलक खेतीक सम्बन्धमे नइ बुझै छेलौं से आब बुझलौं।”

हितनाथ काका बजला-

“गणेश, जँ एकाएकी देखबह ते बहुत पैघ-पैघ समस्या सभ अपना ऐठामक किसानकेँ जकड़ने रहल, किछु समस्या अखनो ओहिना अछिए वा एकरा अहुना कहि सकै छहक जे पहिलुकासँ विकराल रूपमे अखनो अछि।”

बजलौं- “हँ, से तँ अछिए।”

हितनाथ काका बजला-

“अखन नीलक खेतीक चर्च केलियह, अहिना जँ एक-एक समस्याक चर्च करए लगबह तँ एक दिने सम्पन्नो ने हेतह। तँए, अखन मोटा-मोटी किछु समस्याक चर्च कऽ दइ छिअ। जेना-जेना समय भेटैत जाएत तेना-तेना आगू दोसर-तेसर समस्याक चर्च करैत जाएब।”

अपनो समयपर धियान गेल, घन्टा भरिसँ ऊपरे समय बित गेल छल। बजलौं-

“काका, अखन संक्षेपमे कहि दियौ, पछाइत जखन

निचेन हएब तखन विस्तारसँ सभ बात सुनबो-बुझबो करब आ सभ समस्यापर विचारो-विमर्श करब।”

हम्मर बात सुनि हितनाथ काका गुम्म रहि मने-मन विचार करए लगला, कनीकालक पछाइत बजला-

“गणेश, आजादीक आन्दोलनक बीच, माने 1930 इस्वीक पछाइत, किसानक जे सभ समस्या छेलैन ओ सभ आन्दोलनकारीक बीच उठए लगल। अप्पन देश मूलत: किसान प्रधान देश छी। किसानी जीवनक लेल जहिना खेतक मूल्य अछि तहिना खेतीक लेल पाइनिक मूल्य सेहो अछिए।”

बजलौं-

“हँ, से तँ अछिए।”

हितनाथ काका बजला- “जाबे तक देश आजाद नहि भेल छल, माने विदेशी शासन चलि रहल छल, ताबे तक किसानक समस्याकेँ गौण कएल गेल। ओना, किसानक समस्याकेँ जगौलासँ एते तँ लाभ आन्दोलनमे भेबे कएल जे किसानक विशाल जनसमूह आन्दोलनक संग जुड़ल, जइसँ आन्दोलन काफी शक्तिशाली बनि गेल। परिणाम भेल जे अंगरेज देश छोड़ि भागल आ

अप्पन देश स्वतंत्र भेल।”

हितनाथ कक्काक विचार सुनि, अखन तकक जे अप्पन मनक उद्विनता छल ओ तँ कमल मुदा मनमे एकटा प्रश्न उठि गेल, बजलौं-

“काका, देश स्वतंत्र भेलोपर बाढ़ि-रौदीक समस्या तँ अखनो अछिए.!”

बिना कोनो लागि-लपेटिक हितनाथ काका बजला-

“हँ, से तँ अछिए। मुदा खेतक उपजमे किछु बढ़ोत्तरी तँ भेबे कएल अछि किने। ओना, जेते हेबाक चाही से नहियेँ भेल अछि। तइ पाछू किछु समस्यो रहल अछि। मुदा तइयो...।”

बजलौं-

“की तइयो?”

हितनाथ काका बजला-

“देश स्वतंत्र भेलाक बाद जमीन्दारी प्रथा समाप्त भेल, जइसँ किसानक जे जमीन निलाम होइ छेलैन ओ सुरक्षित भेल। खेतक पटौनी आ उद्योगक लेल जे कोसी नहर आ जल-विद्युत परियोजना छल ओ कागजेपर रहि गेल। ओना, दुनू परियोजना पूर्ण भेलासँ अपना सबहक

जीवनमे जेतेक खुशहाली अबैत से नहियेँ भेल अछि जइसँ जेते पेबाक चाही से नहियेँ पेलौं अछि। तँए अखनो जरूरत अछि जे ऐ दिशामे किसान उठिकऽ ठाढ़ होथि आ अप्पन जिनगीकेँ खुशहाल बनबैक पाछू लागि जाइथ। देश अप्पन छी, शासन अप्पन छी, तखन समस्याक समाधान किए ने हएत। देशक आर्थिक स्थिति जेतेक मजगूत हएत तेते ने देशो मजगूत हएत।”

बजलौं- “हँ, से तँ हेबे करत मुदा ओ हएत केना?”

हितनाथ काका बजला-

“अखन तक जे नइ पेलौं हेन ओकरा पबैले अपना सभकेँ, माने देशक किसानकेँ, संगठित हुअ पड़त।”

❑

शब्द संख्या: 1999, तिथि: 23 सितम्बर 2024

आमक गाछी

तीस बरख धरि मुम्बइमे रहलाक बाद सोमेश्वर भायकेँ नोकरियोसँ आ बाहर—मुम्बइ—मे रहैसँ सेहो मन उचटए लगलैन। समय छल जखन गामसँ, माने बनरझुल्ला गामसँ सोमेश्वर भाइक मनमे विराग उठलैन आ ओतएसँ मुम्बइ आबि गेला।

कौलेज जीवन बितलाक बाद, माने एम.एस-सी. केलाक पछाइत सोमेश्वर भायकेँ जहिना गामसँ विराग आ मुम्बइक प्रति राग जागल रहैन तहिना आइ तीस बर्खक पछाइत मुम्बइसँ विराग आ गामक प्रति राग जगलैन अछि। गामक प्रति विराग जगैक कारण भेल छेलैन गामक दयनीय स्थिति। ओइ समयमे गामक स्थिति ओहन छल जे जीवनक मूलो आवश्यकताक पूर्ति हएब कठिन छल, जइसँ जीवन जीवन जकाँ नहि रहि मृत्यु प्राय छल। गाममे ने पढ़ै-लिखैक साधन- स्कूल-

कौलैज छेलै, ने बर-बेमारीक इलाजक लेल अस्पताल आ ने जीवनक उपयोगी वस्तुक लेल हाटे-बाजार छल।

ओना, सोमेश्वर भाइक परिवार गामक सुभ्यस्त परिवार अखनो छैन। ने खेबा-पीबाक असुविधा आ ने रहैक घर-दुआरक असुविधा, मुदा नव पीढ़ीक जे जीवन जीबैक इच्छा रहै छैन तइ अनुकूल सोमेश्वर भाय अप्पन परिवारकेँ नहि देखि रहल छैथ। ओना, ओ अपने कहियो मुम्बइ गेल नहि छला जइसँ ओतुक्का रहने-सहन आकि जीवन जीबैक सुविधाकेँ अपना आँखियेँ देखने रहितैथ, मुदा लोकोक मुहेँ सुनि आ पत्रो-पत्रिकादिमे पढ़ि शहरी जीवनसँ आकर्षित होइत सोमेश्वर भाइक मनमे एतेक विश्वास जनैम गेलैन जे गामक जीवन मनुक्खक लेल कोनो जीवन नहि छी।

गाममे रामखेलावन काकाकेँ, माने सोमेश्वर भाइक पिताकेँ, दस बीघा जोतसीम जमीन, बीघा भरिक गाछी-कलम आ बीघा भरिक पोखैर सेहो छेलैन, जइसँ परिवारमे ने कहियो खेबा-पीबाक अन्ने आकि फले-फलहरी—आमे-जामुन—आकि माछेक तिरोट कहियो भेलैन। ओना, जइ हिसाबसँ खेत-पथार रहैन तइ हिसाबसँ अन्न-पानि, आमो आ माछो नहियेँ होइ छेलैन,

मुदा पाँच-छअ गोटेक परिवार लेल तँ पर्याप्त छेलैन्हे। नीक उपजा नइ होइक मूल कारण छल खेती करैक पद्धति, जे अदौसँ अपना ऐठामक गाममे चलैत आबि रहल अछि। तँए, जमीनक हिसाबसँ कम उपज होइते छलैन। विरले कोनो साल, सुभ्यस्त समय भेने उपजा होइ छेलैन, बाँकी साल बाढ़ि-रौदीक प्रभाव भेने उपज प्राय: मारले जाइत रहैन। गाछियो-कलमक स्थिति सेहो तहिना रहैन। आम फड़बैक जे आधुनिक तकनीक आबि गेल अछि, से नहि अपनौने कोनो साल आम फड़ैत रहैन आ कोनो साल नहियेँ फड़ि पबैन। पोखरिक माछोक सएह स्थिति छेलैन। अनाड़ी-धुनाड़ी माछ जे पोखैरमे भऽ जाइत रहैन बस तेतबे, ने कहियो पोखैर साफ करबैथ आ ने माछ पालैक कोनो तकनीके अपनाबैथ, फलाफल संतोषप्रद माछोक पैदावार नहियेँ होइत रहैन। खाएर, किछु छेलैन तैयो परिवारक हिसाबसँ अधिक रहने काज चलिये जाइत रहैन। मुदा, आम छोड़ि ने दोसर कोनो फलेक खेती करैक ऊहि परिवारमे छेलैन आ ने अखन तकक समाजेमे एहेन विचारधारा छल, जे आनो-आन सइयो रंगक फल अछि जेकरा लगौलासँ सइयो रंगक फलक उपज हएत। एक-सँ-एक अछि।

आन फलक रूपमे जहिना गामक आन-आन किसान, माने कियो-कियो, एकटा गाछ नेबो, एकटा गाछ दारीम, एकटा गाछ लताम, एकटा गाछ धात्रीम, एकटा गाछ बेल लगौने छला तहिना रामखेलावन काका सेहो लगौने छला। ओना, गाम-समाजक लोकक बौद्धिक चेतनो तेहने छेलैन, जइसँ फलक गुण-अवगुण नहियेँ जकाँ बुझैत रहैथ, तखन तँ दोसराक देखा-देखी कियो-कियो एक-आध टा गाछ रोपि लइ छला।

गामसँ मुम्बइ एलाक बाद सोमेश्वर भाय जहिना आर्थिक उन्नति केलाह तहिना वैचारिक उन्नति सेहो भेलैन जइसँ गामक प्रति आकर्षण बढ़लैन। बैंकमे नोकरी भेने नीक दरमाहो भेटलैन आ अनेको रंगक कारोबार करैक अवसरो भेटबे केलैन।

सोमेश्वर भायकेँ तीस बर्खक मुम्बइ प्रवासक बीच हुनकर माता-पिता मरि गेलैन। पहिने माए मरलैन पछाइत, तीन सालक बाद पिताक मृत्यु सेहो भऽ गेलैन। माइक मृत्युमे सोमेश्वर भाय गाम आबि पिताक विचारानुसार श्राद्ध-कर्म केलाह। पाइक अभाव छेलैन्हे नहि, तँए जसो खूब भेलैन। माइक क्रिया-कर्म सम्पन्न भेलाक बाद जखन सोमेश्वर भाय मुम्बइ वापस हुअ

लगला तखन मनमे उठलैन जे अखन तक माता-पिता गाममे संगे-संग रहै छला, तँए कोनो तरहक तेहेन अभाव नहि बुझि पड़ि रहल छेलैन, मुदा आब तँ से नहि रहलैन। आब तँ पिता असगरूआ भऽ गेला, के भानस करतैन आ केकरा भरोसे गामकेँ छोड़ि केतौ बाहरे जेता?

मुम्बइ जाइसँ पहिने, माने माइयक श्राद्ध-कर्म भेलाक बाद, सोमेश्वर भाय पिताकेँ कहलखिन-

“बाबूजी, एते दिन माइयो जीवित छेली, मुदा आब तँ ओ रहली नहि, अहूँ मुम्बइये चलू।”

बेटाक विचार सुनि रामखेलावन काका मने-मन विचारए लगला जे की करब नीक हएत? मनमे दू तरहक जीवनक विचार उठलैन। अखन तकक गामक जीवन आ बेटा-पुतोहुक संग मुम्बइक जीवन। गामक जीवनक अभ्यस्त जीवन रामखेलावन कक्काक बनले छेलैन। अप्पन घर-दुआर, खेत-पथार आ सर-समाजक संग कुटुम-परिवार, अड़ोसी-पड़ोसी, हित-अपेछित इत्यादिक एकटा विशाल दृश्य हुनका सामनेमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। तैबीच अप्पन समस्या, माने जीवनक समस्या हुनका एतबे बुझि पड़लैन जे पत्नीकेँ परोछ भेने भानस-भातक दिक्कत हएत, मुदा आन-आन समस्या

सोझामे एबे ने केलैन। अप्पन हट्ठा-कट्ठा शरीर रहबे करैन, तइपर परिवारक सभ काज सम्हारैक क्षमता सेहो रहबे करैन। तँए, अपना मनमे ई विश्वास बनले छेलैन जे जन-बोनिहारक हाथे जहिना सभ काज आइ धरि सम्हारैत एलौं अछि, तहिना आगू सम्हारि लेब। किछु समय विचारलाक बाद रामखेलावन काका बजला- “बौआ, अखन तकक जीवन जइ धरतीपर बीतल ओकरा आब अन्तिम समयमे छोड़ब अपना केनादन बुझि पड़ैए। तोरा हम ई नइ कहबह जे तूँ मुम्बइ छोड़ि गाम आबि हम्मर सेवा करह, ई तोहर विचार भेलह। मुदा हम गाम छोड़ि केतौ ने जाएब।”

पिताक विचार सुनि सोमेश्वर भाय दोहराकऽ किछु ने बजला। सोमेश्वर भाय पूरा परिवारक संग, माने तीनू सन्तान, पत्नी आ अपने गामसँ विदा भऽ मुम्बइ चलि एला।

पत्नीक मृत्युक पछाइत रामखेलावन कक्काक शरीर धीरे-धीरे कमजोर हुअ लगलैन। ओना, उमेरक हिसाबसँ उनसठे-साइठ बर्खक छैथ, मुदा पत्नीक मृत्युक कारणेँ आकि परिवारमे असगरे रहैक कारणेँ आकि कोनो आने-आन कारणेँ रामखेलावन काकाकेँ

दिनानुदिन किछु-ने-किछु रोग गरसए लगलैन। अप्पन शक्तिक अनुकूल जाबे तक रामखेलावन काका अपनाकेँ सम्हारि सकला ताबे तक सम्हारलैथ, मुदा तीन साल बितैत-बितैत जीवन बेसम्हार भऽ गेलैन। जीवन जखन बेसम्हार भऽ गेलैन तखन सासुर बसैत बेटीकेँ समाद पठा बजा लेलैन। मुदा विचारक दौड़मे आने-आन जकाँ जहिना रामखेलावन काका बेटीकेँ दोसर परिवारक बुझै छैथ तहिना सुभद्रा सेहो अपनाकेँ दोसर मानिते अछि। मुदा तैयो सुभद्रा अप्पन चारू बच्चा—बेटा-बेटी—केँ संग नेने नैहर आएल। पिताक स्थिति दिनानुदिन खराबे होइत गेलैन। अन्तमे जखन सुभद्राक मन मानि गेल जे पिताजी नइ बँचता तखन सोमेश्वर भायकेँ फोनसँ कहलकैन-

“भैया, बाबूजी नइ बँचता। आब जे दिन जे पहर छैथ, तँए अहाँ गाम आउ।”

एक तँ सोमेश्वर भाइक विचारमे गामक प्रति आकर्षण धीरे-धीरे पनैपिये रहल छेलैन, तैपर पिताजीक अन्तिम स्थिति सुनि दोसरे दिन बैंकमे छुट्टी लैत पूरा परिवारक संग गाड़ी पकैड़ गाम विदा भेला।

सोमेश्वर भाय गाम पहुँचबो ने केलाह, माने रस्तेमे

रहैथ कि बिच्चेमे पिताक मृत्यु भऽ गेलैन। जीवित पिताक मुँह सोमेश्वर भाय नहि देखि सकला।

दाह-क्रिया केलाक बाद दोसर दिन सोमेश्वर भाय असगरे दरबज्जापर बैसल रहैथ, गाम-समाजक बुढ़ो-पुरान आ करो-कुटुम आबि-आबि जिज्ञासा करए लगलैन।

दसम दिन, नह-केश भेलाक बाद श्राद्ध-कर्मक प्रक्रिया शुरू भेल। अखन तक, माने पिताक श्राद्ध-कर्म सम्पन्न होइ तक सोमेश्वर भायकेँ समाजो आ करो-कुटुमक एतेक सहयोग भेटबे केलैन जइसँ काजमे कोनो तरहक असुविधा नहि भेलैन। जहिना माइयक श्राद्ध-कर्ममे जस भेलैन तहिना पितोक श्राद्ध-कर्ममे सोमेश्वर भायकेँ जस भेलैन।

अप्पन मैथिल समाजमे श्राद्ध-कर्मक बारह मासक पछाइत मृत्युक तिथि दिन छाया होइए। माने बारहो मासक छायामे मृत्तात्माक नामपर कम-सँ-कम एक गोरेकेँ भोजन करौल जाइए। तेकर पछाइत, साले-साले मृत्युक तिथि-के वर्षीक कर्मो आ भोजन सेहो होइए। तैसंग आसिन मासक कृष्ण पक्षमे, जेकरा मातृनवमी, पितृपक्ष कहै छिऐ, सेहो होइए। अखन तक सोमेश्वर

भाय ई सभ नइ बुझै छला, जे अपने दियादी परिवारक लखन काकासँ जानकारी भेलैन।

पिताक श्राद्ध कर्मक पाँच दिनक पछाइत सोमेश्वर भाय मुम्बइ चलि गेला। मुम्बइ गेलाक बाद सामेश्वर भाइक मनमे गामक बदलल रूप बेर-बेर आबए लगलैन।

अखन तक, माने मुम्बइ प्रवासक पच्चीस बर्खक दौड़मे सोमेश्वर भाय अप्पन जेठका बेटाकेँ पढ़ा-लिखा बिआहो कऽ लेलाह। छोटका दुनू, माने माझिल बेटी आ छोट बेटा, पढ़िये रहल छैन। ओना, बेटीकेँ सेहो कौलेजक अन्तिमे साल छिऐन जे बिआह करै-जोकर सेहो भइये गेल छैन। छोठका बेटा अखन कौलेजमे प्रवेशे लेलकैन अछि।

पच्चीस सालक मुम्बइक जीवनमे सोमेश्वर भाइक विचारमे परिपक्वता सेहो आबिये गेलैन अछि। बहुतो ओहन विचार जे अखन तक मनकेँ घेर नेने छेलैन तइमे परिवर्तन सेहो भेलैन अछि आ जे विचार अखन तक कहियो ने मनमे उठल छेलैन सेहो सभ उठए लगलैन, जइसँ परिवारक स्पष्ट चित्र गामसँ मुम्बइ तक, माने माता-पिता, सर-समाजसँ लऽ कऽ अप्पन दुनू परानीक जीवनक संग तीनू बेटा-बेटीक जीवन धरि, मनमे नाचए

लगलैन।

दू जीवनक बीच, माने माता-पिताक तँ ग्रामीण जीवन रहलैन आ सोमेश्वर भाइक अपने दुनू परानीक ग्रामीण आ शहरी दुनू भऽ गेलैन, तैबीच बाल-बच्चाक जीवन सोल्हन्नी शहरीए जीवन भऽ गेलैन अछि।

संयोग बनल, जेठ बेटा—रूद्रदेव—कैँ बैंकेमे नोकरी भऽ गेलैन आ मुम्बइयेमे एकटा मैथिल परिवारक कन्याक संग बिआहो भऽ गेलैन। ओना, रूद्रदेवक पत्नी सेहो एकटा प्राइवेट कोचिंगमे शिक्षिका छथिए। समय अपना गतिये चलैत रहल। दिन सप्ताहमे, सप्ताह मासमे, मास सालमे बितैत गेल। बितैत-बितैत सोमेश्वर भायकैँ मुम्बइ एना आब तीस बरख भऽ गेलैन। आब नोकरी मात्र तीन साल बँचल छैन।

एकाएक सोमेश्वर भाइक मनमे उठलैन जे अखन तकक जे वंशगत जीवनक धार बहैत आबि रहल अछि ओ अवरुद्ध भऽ गेल। ओना, गामक प्रति आकर्षण सेहो धीरे-धीरे बढ़िये रहल छेलैन। असगरे कोठरीमे बैसल सोमेश्वर भाइक अप्पन अतीत-सँ-भविष्य धरिक विचार मनमे उठि रहल छेलैन कि तइ बिच्चेमे गामक जिज्ञासा तेतेक उग्र भऽ गेलैन जे निर्णय कऽ लेलाह- काल्हि बैंक

जा कऽ भोलनट्री रिटायरमेन्टक आवेदन दऽ देब.! मनक विचार क्रमश: आगूए बढ़ैत गेलैन। पत्नीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

“परसू गाम चलि जाएब, तँए अहाँ गाम जाइक तैयारीमे जुटि जाउ।”

पतिक विचार सुनि ललित स्तब्ध रहि गेली। मनक जेना सभटा विचार हेरा गेलैन। स्तब्ध भेल ललित बजली-

“एकाएक एहेन विचार मनमे केना आबि गेल?”

सोमेश्वर भाय किछु ने बजला।

पतिकेँ चुप देखि ललित सेहो दोहरा कऽ किछु ने बजली।

प्रात भने सोमेश्वर भाय बैंकमे रिटायरमेन्टक आवेदन कऽ देलैन। मुम्बइमे जे हित-अपेक्षित बनि गेल छैन तिनकासभकेँ किछु ने जानकारी देलखिन। खाली जेठ बेटाकेँ कहलखिन-

“बौआ, काल्हि हम सदाक लेल गाम चलि जाएब। तूँ नोकरी करै छह, तँए अपना विषयमे अपने सोचह।”

पिताक विचार सुनि रूद्रदेव किछु ने बाजल। अपने

मनमे, माने रूद्रदेवक मनमे अपने अनेको प्रश्न उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल, तँए बाजल किछु नहि।

तेसर दिन सोमेश्वर भाय पत्नीकेँ संग केने गाम विदा होइत रूद्रदेवकेँ फेर कहलखिन-

“बौआ, अप्पन सभ किछु छहे। बहिनक पढ़ाइक अन्तिमे साल छिअ। भाइयो—छोटका भाए—कौलेजमे प्रवेश लेलक अछि, तँए ओहो अखन एतए रहत। पछाइत जेना जे हएत जे गप-सप्प होइत रहत।”

पिताक विचारक प्रतिउत्तरमे रूद्रदेव किछु ने बाजल। चुप-चाप सभ बात सुनि, गुम्मे रहल।

गाम आबि सोमेश्वर भाय गाममे रहैक जीवनपर मन दौड़बए लगला मुदा शीतलहरमे जहिना सूर्य उगल रहलाक बादो धुनिये-धुनि बुझि पड़ैए, तहिना सोमेश्वर भायकेँ गाम बुझि पड़ैन, जइसँ आगूक जीवनक रास्ता देखिये ने पबैथ।

ओना, जइ समयमे सोमेश्वर भाय मुम्बइ गेल छला तहियाक सोच-विचार आ आजुक सोच-विचारमे अकास-पतालक अन्तर आबिये गेल अछि। एकाएक सोमेश्वर भाइक मनमे उठलैन जे मनुक्ख समाजक बीच

रहैबला जीव छी, नहि कि आन-आन जीव-जन्तु जकाँ असगरे जीवन-यापन करैबला। अपनो तँ गामक समाजमे आबिये गेलौं आ जाबे जीब ताबे रहबाको अछिए। गाम दिस जखन नजैर उठाकऽ देखए लगला तँ पैछला पीढ़ीक अन्त आ नव पीढ़ीक उदयपर नजैर पड़लैन। तही बीच ज्ञानदेव बाबापर सेहो नजैर गेलैन।

जइ समय सोमेश्वर भाय मुम्बइ जाए लगला तइ समयमे जे ज्ञानदेव बाबाकेँ पएर छुबि प्रणाम केने छेलखिन तँ ज्ञानदेव बाबा आसीरवाद दैत कहने रहैन- “बौआ! केतौ रही, चैनसँ रही।”

ज्ञानदेव बाबाक आसीरवाद ‘केतौ रही चैनसँ रही’ मोन पड़िते सोमेश्वर भाइक मनमे उठलैन जे ज्ञानदेव बाबा तँ आसीरवाद देने रहैथ जे केतौ रही चैनसँ रही, मुदा चैन रहल कहाँ? अपने मन, माने सोमेश्वर भाइक अपने मन विचार देलकैन जे सभसँ पहिने ज्ञानदेव बाबाक भेँट करब जरूरी अछि। जरूरी ऐ दुआरे अछि जे अस्सी-पचासी बर्खक हुनकर जिनगी गामे बीतल छैन तँए गामक ओते पैघ अनुभवी तँ छथिए। ओना, सोमेश्वर भाइक अँगनो-घर खढ़-पातसँ बोनाइये गेल छैन, मुदा मनक दृढ़ता एतेक मजगूतीक संग कहिये रहल छैन जे

सभ किछुकेँ चिक्कन-चुनमुन करैत रहै-जोकर बना लेब। जखन गाम आबि गेलौं तखन गाममे रहैक अछि। ..सिनेमाक रील जकाँ सोमेश्वर भाइक मनमे उठलैन जे आइ धरिक अप्पन पूर्वज तँ अही घर-घराड़ीमे ने रहला। तैसंग गाममे रहैक जिज्ञासाक शक्ति मनकेँ एते शक्ति दइये रहल छेलैन जे दुनियाँमे एहेन कोन काज अछि जे मनुक्ख नहि कऽ सकैए। तत्काल जे घर-दुआर अछि, तहीमे रहब आ काल्हिसँ नव सिरासँ बनबैक परियास सेहो करब। एते सामर्थ्य तँ अपनो बनियेँ गेल अछि, माने आर्थिक स्थिति सुदृढ़ भइये गेल अछि जे नीक-सँ-नीक घरो आ रहैक बेवस्थो कइये सकै छी।

चारि बजे बेरुका समय। सोमेश्वर भाय ज्ञानदेव बाबाक ऐठाम विदा भेला। ज्ञानदेव बाबा दरबज्जापर परपोता-परपोतीक संग बैसल मन बहलबैत रहैथ। तहीकाल सोमेश्वर भाय पहुँचला। पहुँचते ज्ञानदेव बाबाक पएर छुबि प्रणाम करैत सोमेश्वर बजला-

“बाबा, हम सोमेश्वर।”

‘सोमेश्वर’ सुनि ज्ञानदेव बाबा मने-मन स्मरण करए लगला। मुदा, एक तँ नजैरिक कम भेने दोसर, बेसी दिनपर भेँट भेने ज्ञानदेव बाबा बजला- “बौआ, नीक

जकाँ धियानपर नहि आबि रहल छह?”

सोमेश्वर भाय अप्पन परिचय विस्तारसँ देलैन। ज्ञानदेव बाबा बजला- “लोक सभ गाम छोड़ि-छोड़ि परदेश भागि रहल अछि आ तूँ केना विपरीत दिशामे आबि रहल छह?”

सोमेश्वर भाय बजला- “बाबा, अहाँ तँ अपने अनुभवी लोक छी, मुदा अप्पन जे मनक विचार बनि गेल अछि ओ गामेमे रहैक बनि गेल अछि, तँए गामेमे आब रहब।”

ज्ञानदेव बाबा बजला- “गाममे नीक लगतह?”

सोमेश्वर भाय बजला- “नीक लागब आकि अधला लागब, ई तँ मनक विचार छी।”

सोमेश्वर भाइक विचार सुनि ज्ञानदेव बाबा ठहाका मारि हँसैत बजला- “बौआ, यएह विचार जीवनकेँ चिन्हब सेहो छी। रामायणमे पाँती अछि, ‘जहाँ बसी तँह सुन्दर देसु’। सुन्दर आकि असुन्दर कोनो जगह नइ होइत अछि, ओकरा बनौलासँ सुन्दर-असुन्दर बनैत अछि।”

सोमेश्वर भाय मने-मन विचार केलैन जे ज्ञानदेव बाबाकेँ किछु पुछबैन नहि, हुनका सभकिछु देखल-

सुनल आ भोगल छैन्हे। बिनु पुछनौं बजैक क्रममे सभ किछु बजबे करता। तइमे अप्पन जीवनक लेल जे उपयोगी हएत तेकरा पकैड़ चलब। मोटे शब्दमे सोमेश्वर भाय बजला- “बाबा, अपनेक असीरवाद चाही।”

ज्ञानदेव बाबा बजला- “बौआ, असीरवादो आ दीक्षो दइक चलैन समाजमे भरपूर पसैर गेल अछि। मुदा हम तँ आइ तक केकरो ने असीरवाद देलिऐ आ ने दीक्षे देलिऐ हेन। मात्र जीवन जीबैक विचार सोझामे दइ छिऐ, जे जेहेन मने बुझैए से तेहेन जीवन पबैए। आमक गाछी जकाँ परिवारो आ जीवनोकेँ धरतीमे रोपि, ओकरा सेवा करैत लोक गाछी बना ओइसँ रंग-रंगक फलक सुआद जहिना पबैए तहिना ने जीवनो छी, जेहेन श्रम आ लगनसँ ओकर सेवा करबह तेहने ने मधुर फल सेहो पेबह। ऐसँ बेसी दुनियाँमे अछिए कि जे कहबह। जखन गाम आबि रहए चाहै छह तखन बेर-कुबेर भेँट हेबे करबह। आगूक गप-सप्प आगू होइत रहत।”

❑

शब्द संख्या: 2248, तिथि: 30 सितम्बर 2024

भुतलाएल जीवन

पूस मास। तिलासंक्रान्ति पाबैन नइ भेल अछि। आठ दिन बाँकी अछि। आइ बीस दिनसँ शीतलहर चलि रहल अछि। सुर्जक केतौ पता नहि अछि। रातिये जकाँ दिनो भेल रहैए। किछु गोरेक मनमे एहनो शंका उठि रहल छैन जे भरिसक आब सुर्ज उगबे ने करत। जाड़ सेहो आन सालक अपेक्षा बेसीए भऽ रहल अछि। छअम दिन श्याम काका सेवा निवृत्त भऽ दुनू परानी गाम आबि गेला।

श्याम कक्काक गाम आएब सुनि मनमे भेल जे जा कऽ जिगेसा कऽ लिऐन। ओना, से इच्छा अपना मनमे पराते भने भेल, माने जइ दिन ओ गाम एला तेकर पराते भने, मुदा समयक गति तेहेन बनि गेल अछि जे कखनो घरसँ निकलैक साहसे ने होइए। मुदा, फेर अपने मन कहलक जे जँ एहने समय रहत तखन तँ जिगेसा कएल

नहियेँ हएत। समयक कोनो ठेकान अछि। शीतलहरी समाप्तो भऽ सकैए आ बेसी नहि भऽ सकैए सेहो केना नइ कहल जाएत। एहनो अनुभव अछिए जे दिनक कोन बात जे महिनो-महिनो दिन शीतलहरी लधले रहैत छल। ओना, अखन तक अही आशामे छेलौं जे दू-चारि दिनक पछाइत शीतलहरी समाप्त भऽ जाएत मुदा से भऽ नहि रहल अछि। दिनो दिन बेसियाएले जा रहल अछि। अप्पन अनुभव एहेन अछिए जे आनो साल शीतलहरी होइ छल आ पान-सात दिनक पछाइत समाप्त भऽ जाइत रहए। भूतसँ वर्तमान तकक समयक रूप-रेखापर नजैर जाइते एकाएक मन बनि गेल श्याम काकाकेँ भेँट करबैन। गुलेबनसँ कान बान्हि, ऊनी चद्दैर देहपर लेलौं आ श्याम काका-ऐठाम विदा भेलौं। भिनसुरका उखड़ाहाक समय, करीब नअ बजैत रहइ।

पहिने जखन श्याम कक्काक पिताजी जीवित रहथिन तखन नमगर-चौरगर हुनकर दलान रहैन। देवाल कँचका ईटाक आ ऊपरमे खढ़क छार रहैन। ओइ दलानकेँ तोड़ि श्याम काका जे कोठरीनुमा दलान बना लेलैन अछि ओ मुश्किलसँ बारह फीट लम्बा आ आठ-नअ फीट चौरा छैन।

श्याम कक्काक ऐठाम पहुँचलौं तँ देखलौं जे दुनू परानी ओही कोठरीमे, माने दरबज्जाक कोठरीमे एक्के चौकीपर सीरक ओढ़ि बैसल गप-सप्प कऽ रहला अछि। दरबज्जाक ओइ कोठरीमे दूटा कुरसी, एकटा टेबुल आ दूटा चौकीक मात्र जगह अछि। लगमे पहुँचते हुनका प्रणाम करैत दोसर चौकीपर बैसलौं। ओना, मनमे भेल जे जखन कुरसी खाली अछि तखन कुर्सीएपर बैसी मुदा अपने मन कहलक जे कुरसीसँ नीक चौकीएपर बैसब हएत। चद्दे ओढनहि छी, भने गरमाकऽ बैसब।

श्याम काका गौरी काकीकेँ कहलैन- “कने चाह बनाउ।”

जहिना श्याम काका गौरी काकीकेँ कहलखिन तहिना गौरी काकी चाह बनबैक ओरियानमे लगि गेली। जाड़क दुआरे चाहोक सभ सामान आ स्टोवो दरबज्जेपर रखने छैथ।

अपने मने-मन सोचैत रही जे श्याम काका सेवा निवृत्त भऽ गाम एला अछि तँए अपने ने अप्पन जीवनक तीत-मीठ बजता, हम किए पुछियौन। गप-सप्पक क्रम जखन आगू बढ़त तखन जँ केतौ बुझैमे नहि औत तँ पुछि लेबैन। जाड़क दुआरे आकि कोनो दोसरे कारणेँ श्याम

काका प्रणामक जवाबमे आसीरवाद दैत किछु बाजए तँ चाहला मुदा बजला किछु ने। मनमे हुअ लगल जे भरिसक श्याम काका भीतरसँ व्यथित छैथ तँए आगू किछु बाजि नहि रहल छैथ। ओना, मनमे ईहो हुअए जे अपना मने जँ नहियोँ बजता तँ पुछि-पुछिकऽ बजाइये सकै छिऐन। तैबीच गौरी काकी चाह बना लेलीह। तीनटा कपमे चाह छानि अपनो दुनू परानी लेलैन आ हमरो दैत, सभ सामान माने स्टोवकेँ मुझा, केटलीकेँ अखारि फेर ओहिना रखि लेली जेना चाह बनबैसँ पहिने छेलैन। तीनू गोरे चाह पीबए लगलौं। जेना-जेना चाह पीबैत गेलौं तेना-तेना सबहक शरीरमे गरमी सेहो अबैत गेल।

करीब आधा कप चाह पीलाक बाद श्याम काका बजला-

“जीतन, अखन तक जे बुझै छेलौं, तइमे...।”

श्याम कक्काक विचार कोनो भाँजेपर नइ चढ़ल। भाँजोपर केना चढ़ैत? जँ स्पष्ट बाजल रहितैथ तखन ने भाँजपर चढ़ैत, से तँ बजला नहि। ओना, अपनो किछु बजलौं नहि, मुदा सुनैक जिज्ञासा तँ मनमे रहबे करए। तँए हुनके दिस अप्पन मुँह उठा तकैत रही। कनी कालक बाद श्याम काका अपनहि बजला- “जीतन! जीवन बित

गेल, माने कर्मक जीवन मुदा गामक लोककेँ हमरासँ कोनो सेवा नहि भऽ सकल.!”

श्याम कक्काक विचार सुनि अपना मनमे अनेको विचार जगल, किए तँ सेवो कि कोनो एक्के रंगक होइए? मुदा फेर अपने मनमे भेल जे बिनु सुनल बातपर विचार करब उचित नहि। किए तँ अपने किछु विचार करी आ श्याम कक्काक मनमे दोसर विचार जँ होनि तखन तँ विचारेक ताल-मेल नहि बैसत। तइसँ नीक जे किए ने हुनका अपने मुहेँ बजबा कऽ सुनी आ पछाइत विचार करी। बजलौं-

“से की काका?”

श्याम काका बजला-

“जीतन! तोरा बुझल हेतह कि नहि, तँए जड़िये सँ कहै छिअ।”

श्याम कक्काक विचार सुनि मनमे जगल जे जखने जड़िसँ सभ बात बजता तखने ने सभ बात, माने बीतल दिनक सभ बात सोझमे औत। जखन सभ बात सोझामे आबि जाएत तखन जइ-जइ ठाम रास्ता छुटल देखबैन तइ-तइ ठाम दोहरा कऽ पुछि लेबैन। जखने पुछबैन

तखने ने अपने मुहेँ बजता जे अमुक कारणेँ फल्लाँ काज नइ कऽ सकलौं आकि जानियेँ कऽ नहि केलौं..! बजलौं-

“काका, समैये तेहेन बनि गेल अछि जे हाथ-पएर सँ किछु कइये ने सकै छी। एतौ छी तँ सौंसे देह झपनहि छी, घरोपर जाएब तँ तहिना रहब। तँए, हमरा कोनो अगुताइ नहियेँ अछि। अपना जनैत जे छुटल तेकरा कने स्पष्ट करैत बजियौ जे हमहूँ सुनबो करब आ विचारबो करब जे की करैक चाहै छल आ की नहि केलौं।”

गामो-घरमे लोक बजिते अछि जे दुखक बात सभ बजैए मुदा सुखक बात कियो ने बजैए। भरिसक श्याम काकाकेँ सेहो तहिना भेलैन। बजला-

“जीतन, आजुक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे नोकरी-चाकरी करैले लोक जहाँ-तहाँ जा रहल अछि, मुदा अपना संग से नहि भेल।”

आगूक विचार बिनु बुझनहि बजा गेल-

“ई तँ अप्पन-अप्पन भाग्य होइ छै, काका। एक्के काज केकरो असानीसँ भऽ जाइ छै आ केकरो जीवन भरि परियास केलाक बादो नहि भऽ पबै छइ।”

‘भाग्य’ सुनि आकि कोनो दोसरे कारण मनमे उठने

श्याम कक्काक मन बिहुसलैन। बिहुसिते बजला-

“जीतन! भरिसक तोहर जन्मो तहिया भेल हेतह कि नहि, गप तहियेक छी। आइसँ करीब पैंतीस-चालीस बरख पूर्वक।”

बिच्चेमे बजलौं-

“जन्म तँ भऽ गेल छल हएत मुदा बाल-बोध रहने किछु बुझि नहि पेब रहल हएब।”

श्याम काका बजला-

“हँ, भऽ सकैए तोहर जन्म भऽ गेल हेतह, मुदा बाल-बोध रहने अखियास नइ हेतह।”

बजलौं-

“विचार स्पष्ट करबै तखन किछु अनुमानो तँ कइये सकै छी।”

श्याम काका बजला-

“जइ समयमे अपने पढ़ैत रही तइ समयमे अपना इलाकामे कौलेजक कोन बात जे हाइयो स्कूल आँगुरेपर गनल छल।”

अपनो बुझल रहबे करए जे 1940-41 इस्वीमे दरभंगा जिलामे मात्र सी.एम. कौलेज खुजल, पछाइत

आर.के. कौलेज मधुबनीमे खुजलै। तइ समयमे मधुबनी जिला नइ बनल छल। 1972 इस्वीमे दरभंगा जिला तीन जिलामे विभाजित भेल- दरभंगा, मधुबनी आ समस्तीपुर। बजलौं-

“हँ, से तँ रहबे करए।”

श्याम काका बजला-

“अप्पन परिवार सुभ्यस्त छल, गामक लग-पासमे ने कोनो हाइ स्कूल छल आ ने कौलेज। तँए हाइये स्कूलसँ होस्टलमे रहए लगलौं जे कौलेज तक रहि पढ़लौं।”

बजलौं-

“देश स्वतंत्र भेलाक बाद, माने 1947 इस्वीक पछाइत कौलेजो आ हाइयो स्कूलसभ खुजल।”

हमर विचार श्याम काकाकेँ नीक लगलैन। बजला-

“जखन कोनो नमहर छुट्टी होइ, माने गरमी छुट्टी, दुर्गापूजाक छुट्टी, तखने टा गाम आबी, नहि तँ एक-आध दिनक छुट्टीमे बेसी नहियेँ आबी। हँ, बिरले कोनो-कोनो पावनिमे गाम आबि जाइ। पिताजी अपनेसँ जा-जा महिना दिनक खर्च पहुँचा आबैथ।”

बजलौं- “ओइ समयमे, माने जहिया अपने हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही, गाममे एक्की-दुक्की लोक कौलेजक कोन बात जे हाइयो स्कूलक मुँह देखै छला।”

श्याम काका बजला-

“जइ समयमे अपने हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही, तइ समयमे मात्र तीनटा हाइ स्कूल जिला भरिमे छल, अखुनका जे जिला अछि तइमे। संस्कृत महाविद्यालय आ उच्च विद्यालय तँ कैक टा छेलै मुदा ओइमे मात्र एक-दू जाइतिक विद्यार्थी पढ़इ, सामान्य विद्यार्थी नहि।”

इतिहासक जानकारी रहने बुझल बात रहबे करए, बजलौं-

“हँ, से तँ छेलैहे।”

श्याम काका बजला-

“जइ समयमे हाइ स्कूलमे हम पढ़ैत रही, तइ समयमे अपना गामक हमहीं टा रही।”

ओना, ई बात कनी-मनी अपनो बुझल रहबे करए मुदा श्याम काकाकेँ प्रत्यक्ष गवाह मानि बजलौं-

“और कियो दोसर विद्यार्थी गामक नइ रहैथ?”

श्याम काका बजला- “नइ, दोसर कियो ने रहैथ।”

विचार स्पष्ट करै दुआरे बजलौं-

“किए ने दोसर रहैथ?”

श्याम काका बजला-

“जीतन! आजुक परिवेश बहुत बदैल गेल अछि तँए तोहर पुछब उचिते छह। मुदा गाममे बहुत गरीबी छल। मात्र तीन-चारिटा परिवार एहेन छल जइ परिवारमे दुनू साँझ चुल्हि जरइ आ भरि पेट भोजन भेटइ। बाँकी परिवारमे तेतेक गरीबी छल जे ने रहै-जोकर घर छेलै, ने देहपर समुचित वस्त्र आ ने दुनू साँझ भोजनक इंतजाम।”

विचारकेँ दोसर दिस बढ़ैत देखि बजलौं-

“काका, छोड़ू ओइसभ बातकेँ, जे बित गेल ओ भूत भेल, अखन अप्पन वर्तमान जीवनक विचार करू।”

श्याम काका बजला-

“जीतन! नोकरीसँ सेवा निवृत्त भऽ गाम एलौं, गाम तँ अप्पन गामे छी। पूर्वजक सभ किछु अही गाममे अछि, तँए रहैक तँ अही गाममे अछि, मुदा.?”

ओना, बजैक क्रममे श्याम काका सभ बात बजला

मुदा पेटमे किछु एहेन विचार रहिये गेलैन जे मुँह खोलि नहि बाजि सकला। खाली ‘मुदा’ कहि चुप रहि गेला। श्याम काकाकेँ चुप देखि अपना मनमे एकटा जुक्ति फुरल। नहेबा काल जखन कानमे पानि चलि जाइए आ अपने नइ निकलैत रहैए तखन जहिना आरो पानि कानमे ढारि ओइ पानिकेँ निकालै छी तहिना बजलौं-

“काका, अहाँ सन-सन पढ़ल-लिखल लोक जखन गाममे रहता तखने ने गामक उन्नति तेजीसँ हएत।”

श्याम काका बजला-

“गाममे रहैत डर होइए.!”

श्याम कक्काक मुहसँ ‘डर’ सुनि मनमे अनेको विचार उठए लगल। मुदा सभ विचारकेँ मनेमे राखि पुछलयैन-

“कथीक डर होइए?”

ओना, हुनकर ‘डर’क कारणकेँ अप्पन ब्रह्म नीक जकाँ बुझि रहल अछि, मुदा हुनकहि मुहेँ सुनब बेसी नीक बुझि चुप्पे रहि सुनैले तैयार रहलौं।

श्याम काका बजला-

“जीतन, तोरा बुझले छह जे दुनू बेटा मुम्बइमे

नोकरी करैए। पता लगल अछि जे दुनू ओतइ अप्पन-अप्पन फ्लैट सेहो कीनि लेलक अछि आ धिया-पुता सभ इंग्लिश स्कूलमे पढ़ैए। आब ओ सभ थोड़े गाम औत।”

बिच्चेमे बजलौं-

“हँ से तँ नहियेँ औत।”

श्याम काका बजला-

“आब तोहीं कहह जे अप्पन दुनू परानीक उमेर साठि बर्खसँ ऊपरेक भऽ गेल अछि। शुरूहेमे, जहिया स्कूलमे नाओं लिखबए पिताजी गेल रहैथ तँ तीन साल कम करि कऽ नाओं लिखौने छला।”

‘तीन साल कम’ सुनि मनमे उठल जे एहेन बिमारी, माने उमेर कम कऽ कऽ लिखाएब, किछु खास जातिमे शुरूहेसँ रहल अछि मुदा बजलौं किछु नहि। बजलौं एतबे-

“हँ, से तँ साठि बर्खसँ ऊपरक उमेर भइये गेल हएत। दिनो-दिन आब निच्चेँ मुहेँ ने हएब।”

हम्मर विचार श्याम काकाकेँ नीक लगलैन। बजला-

“अखन तक अपने दुनू परानी थेहगर छेलौं तँए कोनो काज करैमे असुविधा नहि बुझि पड़ै छल, मुदा

आब तँ दोसरक मदैतिक जरूरत पड़बे करत, से के करत?”

श्याम कक्काक बुढ़ाड़ीक जीवनक चिन्ता सुनि अपनो मन मानि गेल, श्याम कक्काक मन हल्लुक होइ दुआरे बजलौं-

“काका, भाग्यमे जे लिखल हएत से तँ भोगइ पड़त किने।”

कर्मवादी जकाँ श्याम काका बजला-

“जीतन, भाग्य-ताग्य किछु ने छी। जीवनक गति अछि। जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। बच्चा जन्म लइए ओ धीरे-धीरे बढ़ैत-बढ़ैत ढेरबा, सियान, जवान होइए। जवानीक पछाइत बुढ़ापा अबै छै आ बुढ़ापाक पछाइत मरैए। बुढ़ापा अबै तक लोककेँ चढ़न्त अवस्थो रहै छै आ रोगो-वियाधि कम होइ छै, मुदा बुढ़ापा अबैत-अबैत जहिना शरीरक शक्ति कमए लगै छै तहिना रोगो-वियाधिक आक्रमण सेहो हुअ लगै छै।”

बजैत-बजैत श्याम कक्काक आँखिमे नोर भरि गेलैन। धोतीक खूँटसँ दुनू आँखि पोछए लगला। तैबीच विचारकेँ मोड़ैत अपने बजलौं- “काका, ई नहि बुझि

सकलौं जे कथीक डर होइए?”

श्याम काका बजला-

“जीतन, गामक लोकक डर होइए।”

ओना, श्याम कक्काक विचार अपनो मनमे जँचल, मुदा तेकरा मनेमे रखि बजलौं-

“से किए काका?”

श्याम काका बजला- “जीतन! अप्पन जीवन हाइ स्कूलक शिक्षकक रूपमे बीतल। तोरा बुझल हेतह कि नहि, सेहो कहिये दइ छिअ। हाइये स्कूलसँ अपना क्लासमे हम फस्ट करैत रही। फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलौं। साइंसक विद्यार्थी रही। कौलेजोमे तहिना रिजल्ट होइत रहल। फिजिक्ससँ ऑनर्स केलौं। बी.एस-सी.क रिजल्टो ने निकलल छल आ हाइ स्कूलमे साइंस टीचरक रूपमे नोकरी भऽ गेल।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“वाह!”

श्याम काका बजला-

“पाँच सालक पछाइत ट्रेनिंग भेल, टीचर्स ट्रेनिंग। गामसँ बीस-पच्चीस कोस हटल स्कूल छल, तँए अप्पन

गामक एक्कोटा विद्यार्थी, स्कूल दूर रहने, अप्पन पढ़ौल नइ अछि। गामो-समाजसँ हटले रहलौं। हमरासँ केकरो कोनो लाभ नइ भेलइ।”

श्याम कक्काक मनक डरक कारण अपनो बुझिमे आबि गेल। मुदा तैयो तोष-भरोस दैत बजलौं-

“नइ लाभ भेलै तँ की हेतइ। जे करैबला अछि ओ थोड़े उपकारक बदला उपकार करैए ओ तँ उपकारकेँ अप्पन कर्तव्य बुझि करैए।”

श्याम काका बजला-

“मनुक्खक एहेन सोभाव केतेक लोकमे अछि?”

बजलौं-

“काका, समाजमे तीन रंगक मनुक्ख अछि। पहिल ओ अछि जे परोपकारकेँ अप्पन कर्तव्य बुझि, मनमे बदलाक भावना नइ राखि, करैए।”

बिच्चेमे श्याम काका बजला-

“हँ, तोरो विचार मानै छिअ। मुदा ओहन लोक समाजमे केतेक अछि? समाजमे बेसी लोक तँ ओहन अछि जे अनकासँ अप्पन काज कराएबकेँ बुधियारी बुझैए।”

बजलौं- “हँ, अहूँक विचार मानै छी। ओना, समाजमे बेसी लोक ओहन अछि जे बेपारी जकाँ अपनो सेवा करैए आ दोसरोसँ सेवा लइए। मुदा ओहनो लोक तँ अछिए, संख्या भलेँ कम्मे किए ने हुअए, जे दोसराक सेवाक आशा बिनु रखनौं, दोसराक सेवा करिते अछि।”

श्याम काका बजला-

“हँ, तोरो विचार मानै छिअ। मुदा आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि, तइमे केकरो कियो नीक नहि देखए चाहैए। समय छल जे अनकर नीक देखि लोककेँ अपनो मनमे खुशी होइ छेलइ। पहिने तँ कहबीए टा छल मुदा आब प्रवृत्ति बनि गेल अछि जे राहड़िक दालि आ दियादवाद जेतेक गलए तेतेक बेसी स्वादिष्ट। जखन एक वंशक लोकमे एहेन प्रवृत्ति बनि गेल अछि तखन आन परिवार आ आन जाइतिक चरचे की करब.!”

ओना, समाजक बेवहार देखि अपनो मन मानियेँ रहल अछि मुदा बाजब केना जे समाजे नेतघटू बनि गेल अछि। विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

“काका, समाज अखनो वएह समाज छी, जइमे

मनुक्ख अप्पन कल्याण बुझि रहए चाहैए। तँए अहाँक मनमे जे किछु शंका अछि तेकरा मनसँ हटा लिअ।”

श्याम काका बजला-

“सेवा निवृत्तिक पछाइत आइ छअ दिन गाम एना भऽ गेल। अखन तक एक्को गोरे हुलकियो मारए नहि एला अछि। एहेन तूहीं पहिल बेकती छह जे भेँट करए एलह अछि।”

बजलौं-

“काका, समयो तेते खराप अछि, देखिते छिऐ केहेन शीतलहरी चलि रहल अछि जे कियो घरसँ निकलए नहि चाहि रहल छैथ। समय बदलत तखन सभ किछु ठीक भऽ जाएत।”

आशाहीन होइत श्याम काका बजला-

“जीतन! बेकतीसँ पैघ, माने बेकतीसँ ऊपर समाज होइ छैथ तँए सदिकाल हुनका नमन करिते छिऐन। तखन तँ.?”

बजलौं-

“काका, समाजमे सभ रंगक लोक रहिते छैथ मुदा तैयो तँ लोक अप्पन जीवन कहुना-ने-कहुना बिताइये

लइ छैथ।”

श्याम काका बजला-

“हँ, से तँ बितैबिते छैथ, मुदा सभकियो जेतेक हिल-मिलकऽ रही तेतेक बेसी नीक ने।”

बजलौं-

“अपने चाहने समाजो चाहि लेत से बात नइ ने अछि। आइयेसँ नहि, सभ दिनसँ एहेन होइत आबि रहल अछि जे समाजमे किछु लोक उपकारी होइ छैथ तँ किछु लोक अपकारी सेहो होइते छैथ। तहूमे समाज निर्मातासभ अप्पन एहेन महजाल पसारिये देने छैथ जे देखिते छिऐ केतौ धर्मक नामपर तँ केतौ जाइतिक नामपर सदिकाल किछु-ने-किछु विस्फोट होइते रहैए।”

श्याम काका मुहसँ तँ किछु नहि बजला मुदा मुड़ी डोला स्वीकारि रहल छला। मुड़ी डोलबैत श्याम कक्काक चेहरा ओहिना मलिन भऽ रहल छेलैन जहिना हराएल-भुथियाएल लोक, रास्ता भटकने, निराश भऽ जाइ छैथ। बजलौं-

“काका, गामक आन लोकक तँ भार नइ लऽ सकै छी, मुदा जखन कखनो कोनो तरहक दोसराक जरूरत

हुअए तँ हमरा कहब। अप्पन शक्ति भरि मदैत जरूर करब।”

हँसैत श्याम काका बजला-

“जीतन, जीवनमे जँ एक्को बेकतीक वा एक्को परिवारक सहयोग भेट जाए तँ जिनगीक पार-घाट लगबे करत।”

❑

शब्द संख्या: 2418, तिथि: 06 अक्टूबर 2024

पीपरक गाछ

रविकान्त बाबूकेँ जखन डेढ़ बरख सेवा निवृत्तिमे बाँकी रहलैन तखन बाढ़िमे गीरल घर-घराड़ीकेँ चिक्कन-चुनमुन बना दू-मंजिला मकान बनौलनि। निच्चाँ-ऊपर मिला आठ कोठरी रहैबला आ निच्चाँ-ऊपर दूटा दरबज्जा, माने ड्राइंग रूम आ भानसक लेल दूटा कीचैन, नहाइले बाथ रूमक संग दूटा लेटरीन रूम सेहो बनौलैन। रविकान्त बाबूकेँ दू बेटा आ दू बेटी छैन। दुनू बेटीक आ दुनू बेटोक बिआह-दान भऽ चुकल छैन। दुनू बेटी सासुर बसै छथिन आ दुनू बेटा दिल्लीमे, कारखानामे नोकरी करै छैन। ओना, दुनू बेटा अप्पन-अप्पन परिवारक संग दिल्लीएमे रहै छैन, मुदा भविष्यक आशापर बेटोक लेल, गामोमे घर बना रविकान्त बाबू अप्पन दायित्वक निमरजना कऽ लेलैन।

संयोग भेलैन, रविकान्त बाबूकेँ सेवा-निवृत्तिक

पछाइत दू सालक एक्सटेन्शन भेलैन। भारतो सरकार आ बिहारो सरकारक सभ विभागमे स्टाफक कमी अछिए जइसँ रिटारमेन्टक पछातियो दू साल नोकरी बढ़ि गेलैन। नोकरी बढ़ने रविकान्त बाबू अप्पन घरमे ताला लगा सरकारीए क्वार्टरमे रहि रहल छैथ। एक तँ गाम-घरमे भाड़ा-भुड़ी–माने घरकेँ किरायापर लगाएब–क चलैन नहि अछि दोसर, हुनका मनमे ईहो शंका रहैन जे जँ भाड़ापर घर लगाएब आ समयपर भाड़ादार घर नहि छोड़त तखन तँ अनेरे झंझट ठाढ़ हएत, तइसँ नीक ताला लगाकऽ राखबे हएत।

गाममे बनल रविकान्त बाबूक घर ओहिना-क-ओहिना ताला झुलैत खालीए रहलैन। गामक जेतेक अनेरुआ कुत्तासभ अछि तेकरो आ चिड़ै-चुनमुनीक सेहो ओ घर बास स्थल बनि गेल अछि। चिड़ै-चुनमनी सभ बर-पीपर आ कदम-पाखरिक फड़ खा-खा अबैत आ मकानोपर आ अगलो-बगलमे चट करैत। जइसँ अनेको बर-पीपरक गाछ घरक देवालोपर आ निच्चोँ सभमे जनैम गेल। आन-आन गाछ सभ तँ सुइख गेलै मुदा दरबज्जाक आगूमे जे एकटा गाछ छल ओ बँचि गेल। साल बितैत-बितैत ओ गाछ छँटगर भऽ गेल।

रविकान्त बाबूक आवाजाही गाममे रहलैन नहि आ हिनका छोड़ि कियो देखो-भाल करैबला नहियेँ छला। रविकान्त बाबूकेँ अपनो मनमे विश्वास बनले छेलैन जे जखन घरमे ताला लगले अछि तखन ओ सुरक्षित अछिए।

दू सालक पछाइत, माने घर बनलाक दू सालक बाद, जखन पीपरक गाछ छँटगर भेल तँ गामक स्त्रीगणो सभ आ ढेरबा बच्चियो सभ ओइ पीपरक गाछक जड़िमे पानियो ढारए लगल आ जड़िकेँ छील-बना माइटिक पीरी सेहो बना देलक। नहेला पछाइत स्त्रीगणो सभ आ ढेरबा बच्चियो सभ ओइ ठाम बैस हनुमान चालीस, दुर्गा सप्तशती इत्यादिक पाठ सेहो करए लगल आ गाछक जड़िमे, माटिसँ थोड़ेक ऊपर कियो ललका डोरा, कियो ललका कपड़ा सेहो चारू कात लपेट-लपेट बान्हि देलक। आन दिन तँ कम्मो-सम्म मुदा रबिये-रबि भिनसरू पहरमे मेला जकाँ ओतए लागए लगल।

जैठाम लोक रहैत तहीठाम ने हाटो-बाजार आ मेलो-ठेलो लगैए, सएह भेल। दू-तीनटा मुरही-कचड़ीबला आ एकटा चाहबला अप्पन-अप्पन दोकान सेहो रबिये-रबि ओइठाम लगबए लगल। धीरे-धीरे

ओइठामक दृश्य बदैल गेल। आजुक परिवेशो एहेन बनियेँ रहल अछि जे एक्कैसम शदीक तेसर दशक रहितो लोक अन्धविश्वासँ नीक जकाँ जकैड़ रहल अछि। जइसँ पूजा-अर्चनाक बढ़ोत्तरी भइये रहल अछि। गामक केतेको स्त्रीगणसभ ओइ पीपरक गाछक आगूमे एकटंगा दऽ दऽ कबुला-पाती करए लागल। अखन तक रविकान्त बाबूकेँ कोनो जानकारी नहि छेलैन, तँए निश्चिन्त छला।

रविकान्त बाबूक नोकरी समाप्त भऽ गेलैन। नोकरी समाप्त भेला पछाइत गाम एला तँ सभसँ पहिने भकरार भेल ओइ पीपरक गाछपर हुनकर नजैर पड़लैन। गाछ बढ़िकऽ पहिल तल्लासँ ऊपर उठि गेल अछि। गाछक लग आबि जड़िकेँ जखन हियाकऽ देखलैन तखन देखि पड़लैन जे गाछक जड़ि मकानक देवालसँ सटिकऽ अछि जइसँ किछु सिर देवालक भीतरो चलि गेल आ किछु सिर बाहरो अछि। जँ गाछकेँ अहिना छोड़ि देब तँ किछुए दिनक पछाइत तेतेक चतैर जाएत जे घर-आँगनमे छाँह तँ कइये देत जे तैसंग घर लेल खतरनाक सेहो हएत। तेतबे नहि, जखन गाछ मोटाएत आ मोट-मोट ठाढ़ि हएत तखन हवा-बिहाड़िमे जान-मालक खतराक सम्भावना

सेहो अछिए। बिना केकरो किछु कहने गाछ लग ठाढ़ भेल रविकान्त बाबू विचारए लगला जे की करब नीक हएत।

विचार करैत-करैत निर्णय केलैन जे गाछकेँ काटिये देब नीक हएत।

पत्नीकेँ शोर पाड़ि रविकान्त बाबू बजला-

“ऐ पीपरक गाछकेँ अगर छोड़ि देब तँ आगू नमहर खतरा उत्पन्न भऽ सकैए।”

आने स्त्रीगण जकाँ रविकान्त बाबूक पत्नी-अपराजित सेहो छथिये, दुनू हाथ जोड़ि गाछकेँ प्रणाम करैत बजली-

“पीपरक गाछ छी, ऐ गाछपर देवी-देवता रहै छैथ। तँए नीक छोड़ि अधला थोड़े हएत। देखिते छी जे लोक देवी-देवताकेँ अपना घरमे पीरी बना पूजै छैथ, अपनोसभ पूजब।”

रविकान्त बाबूक विचार सेहो थोड़-बहुत ढीलढीलाह छैन्हे, तँए स्पष्ट विचार करैमे हिचकिचा गेलाह। मने-मन जखन गाछक सम्बन्धमे सोचैथ तखन गाछक खतरा स्पष्ट देखि पड़ैन, मुदा जखन पत्नीक विचारपर गौर करए

लगैथ कि एकाएक अप्पन विचार झलफला जाइन। किछु करैत किछु बनियेँ ने रहल छेलैन। समस्याक, माने गाछसँ उत्पन्न होइबला समस्याक पन्ना-पन्नापर जखन रविकान्त बाबू विचारैथ तखन आगूक खतरा स्पष्ट रूपमे देखि पड़ैन जे जखन दुइये सालमे गाछ बढ़िकऽ एतेक नमहर भऽ गेल अछि तखन पाँच साल बितैत-बितैत तेतेक नमहरो भऽ जाएत आ डारियोसभ मोटा-मोटा तेहेन भऽ जेतै जे खतरे-खतरा उपस्थित हएत। तँए, अखने गाछकेँ जड़िसँ काटि हटा देब तँ भविष्यक कोनो खतरा नहि रहत। पत्नी लग आबिकऽ रविकान्त बाबू पुन: बजला- “गाछकेँ काटिये देब नीक हएत।”

पतिक विचार सुनि अपराजित बजली-

“एहेन गलती नइ करू। जँ कोनो राजादैव भऽ जाएत तँ की करब? लोक लगमे जवाबो देल हएत? सभ तँ कहबे करत ने जे अपने केलहा ने भोगै छी.!”

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त बाबूक अपनो मन डोलि गेलैन जे जँ कहीं पत्नियेक विचार सही होइन। फेर अपने मनमे विचार उठलैन जे गाछ-बिरीछक लेल सरकारक वन विभाग अछिए। तँए किए ने वन विभागक पदाधिकारीसँ सम्पर्क कऽ सभ बात कहिऐ।

दोसर दिन रविकान्त बाबू वन विभागक पदाधिकारीक नामसँ दरखास्त लिखि, वन विभागक अनुमण्डल कार्यालयमे पहुँचला। आवेदन दैत एस.डी.ओ.कैँ अप्पन समस्या मुहोँसँ कहि सुनौलखिन।

रविकान्त बाबूक सभ बात सुनि एस.डी.ओ. आश्वासन दैत कहलकैन-

“उचित कार्रवाइ कएल जाएत।”

एस.डी.ओ.क आश्वासनसँ रविकान्त बाबूक मनेमे खुशी भेलैन जे भने अप्पन जवाबदेही हटल। पनरह दिनक समय एस.डी.ओ. देने रहथिन। रविकान्त बाबू घरपर आबि पत्नीकैँ सभ बात सुना देलखिन।

पनरह दिन बीत गेल। वन विभाग दिससँ कोनो कार्रवाइ नहि भेल। सोल्हम दिन रविकान्त बाबू फेर वन विभागक कार्यालयमे पहुँचला। एस.डी.ओ.कैँ कहलखिन-

“अपने पनरह दिनक समय देने छेलौं, मुदा कोनो कार्रवाइ नहि भेल।”

टाल-मटोल करैत एस.डी.ओ. कहलकैन-

“अखन गाछ-बिरीछक गणना चलि रहल अछि, तँए

काजक व्यस्तता तेते अधिक बढ़ि गेल अछि जे अवकाशक दुआरे अहाँक काज पछुआ गेल।”

रविकान्त बाबू बजला-

“तखन?”

एस.डी.ओ. बजला-

“पाँच दिनक भीतर अहाँक काज भऽ जाएत।”

चारिम दिन वन विभागक दूटा कर्मचारी रविकान्त बाबू ऐठाम पहुँचला। गाछकेँ देखि बिना किछु बजने गाछक नम्बर, गाछोपर खोदि चढ़ा देलखिन आ कागजोपर लिखि रविकान्त बाबूकेँ कहलकैन-

“आब ई गाछ सरकारी भऽ गेल, तँए कोनो तरहक उपद्रव नइ होइ।”

गिरगिराइत रविकान्त बाबू बजला-

“हम तँ एस.डी.ओ. साहैबकेँ गाछ काटैक आवेदनो देने छेलिऐन आ मुहोँसँ कहने रहिऐन?”

स्टाफ जवाब दैत कहलकैन-

“जँ गाछ सुखल रहैत तखन तँ सोझेमे कटबा दइतौं, मुदा जखन गाछ हरियर अछि, जीवित अछि तखन काटल केना जाएत।”

स्टाफक बात सुनि रविकान्त बाबू सकदम्म भऽ गेला। स्टाफ दिस टकटकी लगाकऽ तकैत रहि गेला मुदा हुनका मुहसँ किछु ने निकललैन। दुनू स्टाफ विदा भऽ गेल।

रविकान्त बाबू पत्नीकेँ कहलैन-

“आब की करब?”

मुस्कुराइत पत्नी जवाब देलकैन-

“कियो भावीकेँ रोकि सकैए। जे हेबाक हेतै से हेतै, तइले अनेरे ने माथ धुनै छी।”

एक तँ वन विभागक कर्मचारीक किरदानी देखि रविकान्त बाबूक मन भीतरे-भीतर जरिये रहल छेलैन तइपर पत्नीक विचार सुनि आरो मन लहरि गेलैन। मनमे उठलैन जे चारि घरमेचा पत्नीकेँ लगा दिऐन मुदा उम्रक लेहाज करैत लोक लाजक दुआरे ने किछु बजला आ ने किछु केलैन।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। देखे-देखीमे मास दिन आरो गुजैर गेलैन। मास दिनक पछाइत रविकान्त बाबू विचारलैन जे वन विभाग दिससँ नइ ने गाछ काटल गेल, मुदा जँ गाछकेँ छोड़ि देब तखन तँ

जानिकऽ भविष्यक खतरा कपारपर राखब हएत। गुनधुन करैत रविकान्त बाबू विचारलैन जे स्थानीय विधायक जे छैथ हुनकासँ कहिऐन। बुझल रहबे करैन जे विधायकजीक दहिना हाथ मकशूदन छी। मकशूदन रविकान्त बाबूक पड़ोसिया छथिन। दुनू, माने स्थानीय विधायकजी आ मकशूदन एक्के पार्टीक लोक। एम.एल.ए.क चुनावमे मकशूदनजी जान लगा मदैत करै छैन।

मकशूदनकेँ रविकान्त बाबू सभ बात कहलैन। मकशूदन पटना चलबाक विचार देलकैन। दुनू गोरे पटना गेला। विधायकजीकेँ अप्पन सभ बात कहलखिन। आश्वासन दैत विधायकजी जवाब देलखिन-

“मामूली काज ले पटना किए एलौं। अहाँ तँ गामोसँ फोन कऽ दितौं तैयो काज भऽ जाइत। अच्छा! अखन हम अपने तँ गाम नहि जाएब। डी.एम.केँ कहि दइ छिऐ अहाँक काज आठ दिनक भीतर भऽ जाएत।”

विधायकजीक आश्वासन सुनि रविकान्त बाबूक मन प्रसन्न भऽ गेलैन। खुशी-खुशी गाम एला।

आइ आठ दिनक बदला पनरह दिन बित गेल मुदा

कोनो कार्रवाइ नहि भेलैन। एक तँ मकानक देवालक भीतर गाछक सिरकेँ मोटाइत देखि, दोसर प्रशासनसँ एम.एल.ए. तकक बेवहार देखि रविकान्त बाबूक मन भीतरे-भीतर जरिये रहल छेलैन, तैपर भविष्यक खतरा देखि आरो मन विचलित भऽ गेलैन। सोच-विचार करैत रविकान्त बाबूक मनमे उठलैन जे चुपचाप बैसियो जाएब उचित नहियेँ हएत। आशा बान्हि विचारलैन जे वन विभागक जिला कार्यालय जाइ।

दोसर दिन रविकान्त बाबू वन विभागक जिला कार्यालयमे पहुँचला। ओना, परिचित एकोटा कर्मचारी रविकान्त बाबूकेँ जिला कार्यालयमे नहि रहैन मुदा जिनगी भरिक अप्पन जे अनुभव छैन, तइ हिसाबसँ एकटा आवेदन लिखि ऑफिस जा जिला पदाधिकारीकेँ देलखिन। आवेदन पढ़ि पदाधिकारी पुछलकैन-

“अहाँकेँ समस्या की अछि?”

विस्तारसँ सभ बात कहैत रविकान्त बाबू ईहो कहलखिन जे एस.डी.ओ. साहैब लग सेहो आवेदन देलिऐन। आश्वासन देलाक पछातियो ओ किछु ने केलाह। विधायकजीकेँ सेहो कहलयैन मुदा ओहो समय देलाक बादो किछु ने केलाह। हारि-थाकिकऽ अपनेक

लग एलौं हेन।

पदाधिकारी-

“हम की कऽ सकै छी?”

रविकान्त बाबू-

“गाछ कटबा दियौ।”

पदाधिकारी-

“जखन समाजक लोक ओइठाम पूजा-अर्चना कऽ रहला अछि तखन तँ ओइठाम आस्थाक प्रश्न बनि जाइए। जैठाम समाजक आस्थाक प्रश्न अछि तैठाम प्रशासन की कऽ सकैए। तहूमे कहै छी जे वन विभाग दिससँ गाछक नम्बरिंग सेहो भऽ गेल अछि। आब गाछ काटैक कोन बात जे ओकर रक्षाक दायित्व सेहो सरकारक भऽ जाइ छइ।”

पदाधिकारीक विचार सुनि रविकान्त बाबूक मनक विचार मनेमे सुखए लगलैन। मुदा तैयो साहस बटोइर बजला-

“समाजक आस्थाक प्रश्न तँ ओइठाम उठत जैठाम सार्वजनिक स्थलक मुद्दा रहत। हम्मर मुद्दा तँ से नहि अछि, बेकतीगत अछि।”

पदाधिकारी कहलकैन- “बेकतीगत मुद्दा हुअए कि सामूहिक, जे आस्थासँ जुड़ल अछि तइमे हम की कऽ सकै छी।”

रविकान्त बाबू बजला-

“किए ने किछु कऽ सकै छी, हमरो तँ बेकतीगत अधिकारक हनन भइये रहल अछि। जैठाम बेकतीगत अधिकारक हनन होइत रहत तैठाम सरकार आ प्रशासनक दायित्व नइ बनैए?”

ओना, रविकान्त बाबूक विचार सुनि जिला पदाधिकारीक मनमे ठहकबे केलैन जे शासन आ सत्ताक बीच समन्वय बनल रहक चाही, मुदा जे परिवेश बनि रहल अछि तइमे समन्वय बना राखब कठिन अछिए। असमंजसमे पड़ल पदाधिकारी रविकान्त बाबूकेँ कहलकैन-

“अखन अहाँ जाउ, परसू दस बजेक बाद अहाँ ऐठाम आबि हम देखब, पछाइत जे उचित हएत से कार्यवाइ करब।”

पदाधिकारीक आश्वासनक पछाइत रविकान्त बाबू घुमिकऽ घरपर एला। मन खसल रहने मुँह लटकल रहबे

करैन। तैबीच, घाउपर जहिना नून पड़ैए तहिना पत्नी पुछि देलकैन-

“की भेल?”

रविकान्त बाबूक मन जरिकऽ खकसियाह भइये गेल रहैन। पत्नीक प्रश्न सुनि आँखि उठा पत्नीपर देलैन आ चुपचाप नजैर खसा धरती दिस देखए लगला।

❑

शब्द संख्या: 1707, तिथि: 10 अक्टूबर 2024

प्रतिष्ठा पानिमे गेल

सुर्ज डुमैक समय भेने सुर्जक रोशनी धरतीसँ ऊपर उठि-उठि आब अकास मार्ग पकड़ए लगल अछि। अकासक चिड़ैसभ सेहो दिन भरिक प्रवासकेँ तियागि अप्पन-अप्पन घर जाइले अकास मार्गक पतियानी पकैड़-पकैड़ किछु विदाहो भऽ चुकल छल आ किछु विदा होइक तैयारी सेहो कऽ रहल छल। रघुनन्दन मास्टर साहैब सेहो अप्पन सौंझुका कर्मसँ निवृत्त भऽ दरबज्जाक ओसारक चौकीपर आबि बैसिये रहल छला कि तैबीच छिपलीमे चूड़ाक भूजा नेने शकुन्तला आगूमे आबि ठाढ़ भेलैन। पत्नीक हाथक छिपलीमे नोनक संग पीसल मरीच आ कड़ू तेल मिलाएल चूड़ाक भूजापर मास्टर साहैबक नजैर पड़लैन।

अस्सी बर्खसँ ऊपरेक उमेर रघुनन्दन मास्टर साहैबक भऽ गेल छैन। आधासँ बेसी जखन मास्टर

साहैब भूजा फाँकि नेने छला कि तैबीच अनठिया एक गोरे आबि कहलकैन-

“अपनेक बेटा एरेस्ट भऽ जहल चलि गेला अछि.!”

मुँहक चूड़ाकेँ हाँइ-हाँइ कऽ चिबा मास्टर साहैब घोंटलैन। तैबीच ओ आदमी ओइठामसँ चलि गेल। अपरिचित चेहरा देखि मास्टर साहैब किछु बाजि नहि सकल छला, सोझे सुनि नेने छला। जखन ओ चलि गेल तखन मास्टर साहैब पत्नीकेँ कहलैन-

“अप्पन बेटाक किरदानी सुनलौं किने?”

रघुनन्दन मास्टर साहैबकेँ दूटा बेटा। जेठ बेटा हाइ स्कूलमे शिक्षक छैन आ छोट बेटा सिंचाइ विभागक अनुमण्डल कार्यालयमे सरकारी कैशियर। पतिक विचार सुनि शकुन्तला गुम्मे रहि गेली। पुन: मास्टर साहैब दोहराबैत बजला-

“अप्पन बेटाक समाचार सुनलौं कि नहि? यएह छी अहाँक लालन-पालनक फल।”

विचित्र स्थितिमे पड़ल शकुन्तला बजली-

“बेटा बापक हिस्सामे होइए, माइयक हिस्सामे बेटी होइए।”

पत्नीक विचार सुनिते मास्टर साहैबक मनमे अप्पन पछड़बक भान भेलैन। तँए, अपनाकेँ संयमित करैत मास्टर साहैब बजला-

“ऑफिस जाइसँ पहिने मनोज कहाँ किछु बाजल छल.! बाजल एतबे छल जे वेतन बढ़ोत्तरीक लेल आइ रैली निकलत।”

शकुन्तलाकेँ किछु बुझल रहितैन तखन ने किछु बजितैथ, से तँ बुझल रहैन नहि, तँए चुप्पे रहली। बेटाक समाचार सुनि मास्टर साहैब ततमतमे पड़ि गेला, तँए ऐगला समाचार सुनैक जिज्ञासा सेहो मनमे जगि गेलैन। जइसँ हृदयक धड़कन तेज हुअ लगलैन। छिपलीमे राखल चूड़ाक भूजा फाँकिकऽ सठा पानि पीलैन। छिपली उठा पत्नी जखन आँगन दिस विदा भेली कि मास्टर साहैब बजला-

“चाह थोड़ेक कड़गर कऽ बनाएब।”

पतिक विचार सुनि शकुन्तला चुपचाप आँगन जा पुतोहुकेँ कहलखिन-

“चाह बनि गेल अछि आकि देरी अछि? एक चुटकी

चाहपत्ती बेसी दऽ देबइ।”

बिना किछु बजनहि पुतोहु केटलीमे एक चुटकी चाहपत्ती दैत खौलबए लगली। चाह खौलिते गिलासमे छानि आँखिक इशारासँ सासुकेँ लऽ जाइले कहली।

दरबज्जाक चौकीपर बैसल-बैसल मास्टर साहैब मनोजक सम्बन्धमे मने-मन विचारि रहल छला। मनमे अनेको प्रश्न उठि रहल छेलैन। मनोज किए एरेस्ट भऽ जहल गेल.?

अखन तक मनोज कहियो जेल नहि गेल छल तँए पूर्वक कोनो आभास, जेल जाइक, मास्टर साहैबकेँ नहियेँ छेलैन। जहिना कोनो घटनाकेँ उड़न्ती रूपमे सुनलासँ किछु विश्वास होइतो अछि आ किछु नहियोँ होइए तहिना रघुनन्दन मास्टर साहैबकेँ मने-मन भऽ रहल छेलैन। एकाएक हुनका अप्पन पिताजी मोन पड़लैन। मोन पड़लैन जे केना पिताजी गाँधी बाबाक आह्वानपर देश सेवामे जुटि गेला.! गाम-गाम घुमि-घुमिकऽ आमजनकेँ देशक गुलामीसँ केना मुक्ति भेटत तइ पाछू दिन-राति लगि गेला.! केना गामक लोकक संग नमक सत्याग्रहमे जुटि नोन बनबए लगला.! मोन पड़लैन जे केना नून बनबैकाल दारोगा-पुलिस आबि

हुनका रोकलकैन आ तेकर प्रतिवादमे ओ की सभ केलाह.! अजीव साहस पिताजीमे छेलैन। जैठाम लोक दारोगा-पुलिसकेँ देखि डरे नुका रहै छल तैठाम ओ छाती तानिकऽ केना अड़ल रहला जे हम नून बनेबे करब.!

ओना, नून बनबैक कारणेँ घटना सेहो घटिये गेलैन। घटना ई घटलैन जे पहिने दारोगा नून बनबैसँ पिताजीकेँ मनाही केलकैन मुदा से ओ नहियेँ मानलखिन। जइ कारणेँ दारोगा यत्र-कुत्र गारि पढ़ैत रहलैन मुदा तेकर परवाह केने बिना पिताजी नून बनैबिते रहला। दारोगाक संग चारिटा सिपाही सेहो छल। ओना, संयोग एहेन छल जे सिपाहीसभ देशी छल, माने अपना देशक लोक, आ दारोगा अंगरेज छल। देशी रहितो दूटा सिपाही शासनक प्रति एतेक वफादार छल जे अंगरेजोसँ बेसी कट्टर छल, मुदा दूटा सिपाहीक हृदयमे देशो आ देशक अप्पन भाय-बन्धुक जिनगीक भावना सेहो छेलैन। ओना, अंगरेज अफसरक सोझामे अप्पन दायित्वकेँ आँखि दाबि, माने बचाउ करैत, निर्वहन कइये रहल छल। संयोग भेल, पिताजीकेँ नहि मानलापर दारोगा एरेस्ट कऽ जीपमे बैसा लेलकैन। बाँकी जे सभ गौंआँ संगमे रहैन ओ सभ आँखि दाबि-दाबि ओइ जगहपर, माने जैठाम नून बनबै छला,

तइ ठामसँ ससैर गेला आ असगरे पिताजीकेँ दारोगा एरेस्ट कऽ जीपमे बैसा लऽ कऽ चलि गेलैन।

असगर रहितो पिताजी छाती तानि दारोगाकेँ बेतुकार जवाब दइते रहलखिन। जहिना ओ बेतुकार जवाब दैत रहथिन तहिना दारोगा सेहो गारि पढ़ि-पढ़ि जवाब दैन। दारोगाक गारि सुनि-सुनि किछु समय तँ पिताजी बरदास्त केलैन मुदा जखन बरदास्तसँ फाजिल भऽ गेलैन तखन दारोगाकेँ दुनू गालमे दुनू हाथे दू थापर लगा देलखिन। जइक चलैत ओ अनधुन मारियो खेलैन आ अन्तमे जहलो गेला। अपने हाथक अंगरेज सभक कारोबार छल, एक सप्ताहक पछाइत तीन बर्खक जहलक सजा पिताजीकेँ कऽ देलकैन।

पिताजीक घटना मनमे चलैत-चलैत मास्टर साहैबक हृदय पसीज गेलैन। मनमे अप्पन परिवारक प्रतिष्ठा जगलैन। यएह परिवार छी जे देश-समाजक संग अप्पन इज्जतक खातिर गारि-फज्झैत सुनलक, मारि खेलक, जहलमे सजा सेहो कटलक मुदा आइ वएह परिवार केतए जा रहल अछि.? पिताजीक परतापसँ अखनो अप्पन परिवारक प्रतिष्ठा ओहिना जीवित अछि। ..रघुनन्दन मास्टर साहैबक मनमे एकसंग अनेक विचार

चकभौर लऽ रहल छेलैन कि तही काल सिंचाइ विभागक, जइ ऑफिसमे मनोज कैशियर अछि, एकटा प्यून लगमे एलैन। मास्टरो साहैब ओकरा चिन्हैत रहथिन आ प्यून सेहो मास्टर साहैबकेँ चिन्हिते छैन। प्यूनकेँ देखिते मास्टर साहैब पुछलखिन-

“रामखेलावन, की हाल-चाल तोरा ऑफिसक छह?”

रामखेलावनक मन उदास छल, मुदा अपनाकेँ संयमित करैत बाजल-

“काकाजी, ऑफिसक समाचार नीक नइ अछि। मनोज एरेस्ट भऽ गेला।”

ओना, रामखेलावनक मनमे जे विचार छल से विचार मास्टर साहैबक मनमे नहियेँ छेलैन, किएक तँ जे समाचार मास्टर साहैब सुनने छला तइसँ भिन्न समाचार रामखेलावनक मनमे छल। मास्टर साहैब पुछलखिन-

“किए मनोज एरेस्ट भेल?”

तैबीच मनोजक माए- शकुन्तला सेहो आँगनसँ दरबज्जापर आबि ठाढ़ भेली। रामखेलावन बाजल-

“काकाजी, हमरा विभागक हाल, माने सिंचाइ विभागक स्थिति नीक नइ अछि।”

मास्टर साहैब पुछलखिन-

“की नीक नइ अछि?”

रामखेलावन बाजल-

“सिंचाइ विभागक काज मात्र कागजेपर चलि रहल अछि।”

ओना, मास्टर साहैबक इच्छा आरो किछु-किछु पुछैक भऽ रहल छेलैन मुदा मनमे मनोजक एरेस्टिंग नाचि रहल छेलैन तँए आगू नहि बढ़ि विचारकेँ मोड़ैत बजला- “मनोजकेँ एरेस्ट होइक कारण की अछि?”

रामखेलावन बाजल-

“कैश गमनक आरोपमे हुनका एरेस्ट कएल गेलैन हेँ।”

रामखेलावनक विचार सुनि मास्टर साहैब मने-मन हियासए लगला जे मनोजक ऊपरमे ओहिना दोष लगौल गेल अछि आकि वास्तवमे कैश गमन केनौं अछि? जँ कैश गमन केलक तँ ओइ कैशक काज कोन केलक अछि? ने बेटीक बिआह केलक अछि, ने घर बनौलक

अछि आ ने खेते-पथार कीनलक अछि। तखन केलक की अछि? मास्टर साहैब बजला-

“केतेक कैश गमन मनोज केने अछि जे एरेस्ट भेल?”

रामखेलावन बाजल-

“केतेक गमन केने छैथ से तँ हमरा नइ बुझल अछि। मुदा विभागीय जाँचमे पकड़ाएल अछि।”

रामखेलावनक जवाब सुनि मास्टर साहैब गुम्म रहि गेला। थोड़ेक कालक बाद आगूमे ठाढ़ पत्नीपर नजैर दैत बजला-

“सुनलौं अप्पन बेटाक किरदानी?”

शकुन्तलाक मनमे जेतेक चोट कैश गमनक नहि लागल छेलैन तइसँ बेसी बेटाकेँ एरेस्ट भऽ जहल जाइक क्षोभ मने-मन भऽ रहल छेलैन। गमनक चोट नइ लगैक कारण मनमे ई छेलैन जे सरकारी खजानाक लूट तँ सगतर भइये रहल अछि। बेसी-सँ-बेसी यएह ने हएत जे दू-चारि दिन जहलमे रहलाक बाद कोर्टसँ जमानत हएत। साल-दू-सालमे केसोक रफा-दफा भइये जाएत। मुदा गमनक आरोपमे जहल जाएब, ई तँ परिवारक प्रतिष्ठाकेँ

मटियामेट कइये देलक अछि। बिना किछु बजनहि शकुन्तला अप्पन पतिक आँखि-पर-आँखि देलैन। तैबीच ओतएसँ रामखेलावन चलि गेल छला।

पत्नीक नजैर मास्टर साहैबक नजैरपर पड़िते हृदय डोलि गेलैन। मास्टर साहैबक डोलैत हृदयमे उठलैन- जइ परिवारक एक पीढ़ी पुलिसक लाठी खा, जहल काटि परिवारक प्रतिष्ठा बनौलक ओही परिवारक ऐगला पीढ़ी आइ चोरीक आरोपमे, कैश गमनक आरोपमे जहल चलि गेल.! केतए गेल अप्पन पूर्वजक बनौल प्रतिष्ठा आ केतए गेल देशभक्ति.! एकाएक मास्टर साहैबक मन उद्विन भऽ गेलैन। पत्नी दिस तकैत बजला-

“परिवारक प्रतिष्ठा बेटा पानिमे फेंक देलक।”

पतिक विचार सुनि शकुन्तला बजली तँ किछु नहि मुदा हृदयक चोट दुनू आँखिक नोर होइत बाहर हुअ लगलैन।

❑

शब्द संख्या: 1236, तिथि: 13 अक्टूबर 2024

शिवालय

हिमालय पहाड़सँ निकलैत धार। ऊँचगर पहाड़ रहने हिमसँ आच्छादित चोटीसँ निच्चाँ झहरैत जलसँ प्रवाहित होइत धारा धरतीपर उतैर समुद्रमे मिलैले निछोहे उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ दौड़ल आगू बढ़ि रहल अछि। जलधाराकेँ यात्रामे साले-साल मानसूनक बरखा सेहो संग-साथ दैत रहल अछि।

कोसी-कमला धार जकाँ मटिआह शिवगंगाक जलधारा नहि, स्वच्छ, निर्मल, पवित्र जल अपना गतिये दिन-राति आगू बढ़ैत समुद्रमे समाहित होइले दौड़ैत आगू बढ़ि रहल अछि। धारक पछवरिया महारपर शिवालय स्थापित अछि। शिवालय कहिया स्थापित भेल तेकर निश्चित जानकारीक लिखित इतिहास तँ नहि अछि मुदा अनुमानक आधारपर लोक बहुत पुरान मानियेँ रहल छैथ। जीवित जे लोक छैथ सेहो आ जे पूर्वजसभ मुइला

सेहो सभ धारकेँ प्रवाहित होइते देखलैन, तँए शिवालय कहिया स्थापित भेल तेकर जानकारी किनको नहियेँ छैन आ जँ छैन्हो तँ अनुमानित छैन।

शिवगंगा नदीक महारपर स्थापित शिवालयसँ पछवरिया पहाड़ जे निच्चाँ मुहेँ ढलान होइत-होइत मैदान बनि गेल अछि ओइ मैदानपर तीस-चालीस परिवारक घर रहने शिवपुरी गाम बनल अछि। ऐ शिवपुरी गामक जे सभसँ उमेरगर बेकती छैथ, हुनकर नाओं छिऐन मणिशंकर। मणिशंकरकेँ दूटा बेटा, दूटा बेटी, पत्नी आ अपना लगा छअ गोरेक परिवार छैन। बाँकी परिवार, माने शिवपुरी गामक परिवार, सभ रंग अछि। कोनो परिवार एहेन अछि जइमे मात्र एक्के गोरे, चाहे मर्द वा औरत छैथ, कोनो परिवार एहेन अछि जइमे मर्द-औरत मिला मात्र दू बेकती छैथ आ कोनो-कोनो परिवारमे मर्द-औरतक संग बालो-बच्चा अछि, जइसँ तीनियो-चारि आ गोटे-गोटे पाँचो गोरेक परिवार अछि।

पहाड़ी इलाकाक गाम रहने शिवपुरीमे ने कोनो निश्चित भाषा अखन तक स्थापित भेल अछि आ ने जीविकोपार्जनक लेल समुचित साधने बनि सकल अछि। शिवपुरी गामक लोकक सम्बन्ध सेहो विकसित

गामक लोकसभसँ नहियेँ बनि सकल अछि। मुदा तीन कोस दूरपर बसल बाजारसँ, माने मैदानी इलाकामे एकटा छोट-छीन बाजार अछि तइ बाजारसँ, अप्पन जीवनोपयोगी आवश्यकताक वस्तु कीनै-बेसाहैक क्रममे आवाजाही छैन। ओना, कनी-मनी अप्पन खेती-बाड़ीक वस्तु-जात सेहो आ पहाड़ परक रंग-रंगक फल-फलहरी सभ सेहो लऽ जा कऽ ओइ बाजारमे बेचबो करै छैथ, जइसँ जीवकोपार्जन होइ छैन।

शिवपुरी गामक लोकक जीवन मैदानी इलाकाक लोकक जीवनसँ तँ बहुत पछुआएल छैन्हे अखन तक, मुदा चालि-चलैन आ विचार-बेवहारमे ओ सभ मैदानी इलाकाक लोकसँ अगुआएल छैथ। अखन तक ओ सभ झूठ-सत्यक भेद कहाँ बुझलैन अछि। हुनका सभक अप्पन जे बेवहारिक जीवन रहल छैन ओ सोल्होअना सत्येक आधारपर छैन, झूठक दरस अखन तकक जीवनमे नहि आएल छैन। हँ, गरीब लोकक जहिना गाम अछि, माने पहाड़ी इलाकाक गाम, तहिना जीवनमे उपयोगक सभ कथुक अभाव सेहो छैन्हे। ने रहैक समुचित घर छैन, ने देह झँपैक वस्त्र छैन आ ने समुचित भोजनक साधने छैन। तँए कहब जे गामक सभकियो

शरीरसँ रोगाएले छैथ, सेहो बात नहियेँ अछि। तखन एते जरूर अछि जे चालीस-पचास बरख पुरैत-पुरैत बेसी लोक मरि जाइ छैथ। ओना, आजुक जे जीवनक परिवेश शहर-सँ-गाम धरिक बनि गेल अछि ओकर प्रभाव, माने देखा-देखीसँ, शिवपुरी गामक लोकमे सेहो पड़ि रहल छैन।

शिवपुरी गामसँ पाँच कोस दूरपर एकटा विचारपुर गाम अछि। विचारपुर गाममे राधा आ श्याम नामक दूटा युवक-युवती छैथ। हाइये स्कूलसँ ओ दुनू गोरे- राधा आ श्याम, अप्पन जीवनक व्रत लेलैन जे बिआह नहि करब आ अपनासँ जे पछुआएल लोक वा अपना समाजसँ जे पछुआएल समाज अछि, ओइ समाजो आ ओहन बेकतीयोकेँ जीवन दर्शन करा अपना बराबरीमे आनब।

शिवपुरीक लोक सभ अपनामे एकठाम बैस निर्णय केलैन जे एक दिन विचारपुरक राधा आ श्यामकेँ अपना गाम बजा हुनकासँ जीवन-दर्शन सुनि अपनो सभ जीवन दर्शन करब। एकमुँहरी सौंसे गामक लोक विचारि कऽ मणिशंकरकेँ कहलकैन-

“बाबा! अपना शिवपुरी गाममे सभसँ बेसी उमेरगरो आ सभसँ बेसी अनुभवियो तँ अपने छिऐ, तँए अपने ई

भार लियौ जे एक दिन विचारपुरक राधा आ श्यामकेँ अपना ऐठाम बजा हुनका मुहसँ जीवन दर्शनक विचार सुनि अपनोसभ जीवन दर्शन करी।”

गौंआँ-समाजक विचारकेँ आदर करैत मणिशंकर खुशी-खुशी बजला-

“जे विचार अहाँसभ आइ केलौं हेन, से विचार तँ अपना मनमे बहुत पहिनेसँ छल मुदा गामक लोककेँ जहिना विचारसँ छिड़ियाएल तहिना बेवहारसँ छिड़ियाएल देखि अप्पन विचारकेँ अपना मनेमे दाबिकऽ रखने छेलौं, मुदा जखन अहाँसभक विचार स्वयम् जागल अछि तखन जहाँ धरि सम्भव हएत तहाँ धरि अहाँसभक संग-साथ दइले तैयार छी।”

मणिशंकरक विचार सुनि गामक लोकक मनमे जेना नव चेतनाक उदय भेलैन।

परातभने मणिशंकर विचारपुर विदा भेला। रास्तामे रंग-रंगक गामो-समाज आ रंग-रंगक लोकक विचारो-बेवहार देखैत, आगू बढ़ैत मणिशंकर विचारपुरक सीमापर पहुँचला। विचारपुर गाममे प्रवेश करिते मणिशंकर देखलैन जे ऐ गामक लीला तँ अद्भुत अछि।

कहाँ अप्पन गाम शिवपुरी अछि, जैठाम एक-दोसरमे छुआछूत, ऊँच-नीचक बेवहारो आ विचारो सभक मनमे कूट-कूटकऽ भरल अछि आ कहाँ विचारपुरक समाज अछि, जैठाम ने ऊँच-नीचक विचार अछि आ ने एक-दोसरमे छुआछूत अछि.! बिना किछु बजने पुछैत-आछैत मणिशंकर राधा ऐठाम पहुँचला। राधा घरपर नहि छेली। राधाक माए- सुलक्षणी हिनका देखिते पुछलखिन-

“अपने, केतएसँ एलौं अछि?”

मणिशंकर कहलखिन- “शिवपुरीसँ।”

‘शिवपुरी’ सुनिते सुलक्षणी बिना किछु आगू बजने आँगनसँ एक लोटा पानि आनि मणिशंकरकेँ दैत बजली-

“पहिने हाथ-पएर धोउ। देर-सबेर राधा सेहो एबे करत।”

जहिना सुलक्षणी मणिशंकरकेँ कहलखिन तहिना मणिशंकर अप्पन हाथ-पएर धोइ, दरबज्जापरक चौकीपर बैसला। तैबीच सुलक्षणी आँगनसँ जलखइ आनि मणिशंकरक आगूमे रखैत बजली-

“रास्ताक झमारमे थकियो गेल हएब आ भूखो लगि गेल हएत तँए पहिने जलखइ करू।”

जलखइमे चूड़ा-मुढ़ी छल। जहिना सुलक्षणी जलखइ करए कहलखिन तहिना मणिशंकर चूड़ा-मुढ़ी फाँकए लगला। मणिशंकर चूड़ा-मुढ़ी फँकिते रहैथ कि तैबीच राधा-श्यामकेँ अबैत देखि सुलक्षणी बजली- “राधा आबि गेल।”

राधाक नाओं सुनि मणिशंकर हाँइ-हाँइ कऽ जलखइ केलैन। लगमे आबि राधा बजली- “बाबा, अपने केतएसँ आएल छी?”

मणिशंकर- “शिवपुरीसँ।”

राधा- “गामक की हाल-चाल अछि?”

मणिशंकर- “हम्मर गाम पहाड़ी इलाकामे अछि। जहिना लोक गरीब अछि तहिना सभ कथुक अभाव सेहो अछिए।”

मणिशंकरक विचार सुनि राधा किछु ने बजली। थोड़ेकालक पछाइत मणिशंकर बजला- “बुच्ची, अहाँक नाओं सुनि गामक लोक हमरा पठौलैन अछि जे एक दिन अपनो गाममे राधाकेँ बजा आमसभा करू। तँए अहाँसँ आमसभाक लेल समय माँगए एलौं हेन।”

मणिशंकरक विचार सुनि राधा गुम्म भऽ गेली।

कनीकाल गुम्म रहलाक बाद बजली- “कहिया आमसभा करए चाहि रहल छी?”

मणिशंकर- “आठम दिन शिवराति छी, ओही दिन शिवालयक आगूमे जे चट्टान अछि, ओहीपर हमसभ आमसभा करए चाहै छी। अहूँ, श्यामो आ सुलक्षणी सेहो, सभकियो आबी आ हमरासभकेँ जीवन दर्शन..।”

मणिशंकरक विचार सुनि राधा श्यामो दिस आ माए- सुलक्षणी दिस सेहो ताकए लगली। आँखिक इशारासँ दुनू गोरे समय देबाक विचार राधाकेँ दऽ देलैन। दुनूक सहमति पेब राधा बजली-

“बाबा, अपने गाम जा कऽ आइये सभकेँ, मर्द-औरतक संग बालो-बच्चाकेँ जानकारी दऽ दियौन जे हमसभ निश्चित आएब। तैबीच अहाँ सभाक लेल तैयारीमे जुटि जाएब। कोशिश ई राखब जे गामक सभकियो आमसभामे उपस्थित होइथ। तैसंग ईहो परियास करब जे सभकियो एकठाम बैसबो-उठबो करी, सभ मिलि भोजो-भात करी आ खेबो-पीबो करी।”

राधाक विचार सुनि मणिशंकरक मन आनन्दसँ एतेक भरि गेलैन जे अनायास मुहसँ निकललैन- “हमरा

गामक दुर्भाग्य रहल अछि जे घर-घरमे छुआछूत पसरल अछि। एक-दोसराक बीच जहिना एकठाम अन्न खेबाक छुआछूत अछि तहिना एक-दोसराक हाथक पानि पीबामे सेहो छूत अछि। ओना, गाममे ने पोखैर अछि आ ने इनार, सभकियो शिवगंगे धारक पानियो पीबैए आ शिवालयमे पूजो-पाठ करिते अछि।”

फागुन मासक अमावसिया तिथि, संयोगसँ रबि दिन सेहो छी। भोरे राधा श्यामक संग सुलक्षणी सेहो शिवपुरी विदा भेलैथ। गाड़ी-सवारीक कोनो साधन नहि, तँए पएरे तीनू गोरे विदा भेलैथ। चारि घन्टाक रास्ता टपला पछाइत सभकियो शिवपुरी पहुँचलैथ। मणिशंकर पहिनहिसँ शिवालयक आगूमे जे पीपरक गाछक जड़िमे पत्थरक चबुतरा बनल अछि तैपर बैसबोक लेल आ अरामो करबाक लेल एकटा मोथीक बिछान बिछौने छला। तीनू गोरेकेँ बैसै कहलकैन। सुलक्षणी मणिशंकरक आग्रह देखि बजली- “पहिने शिवगंगामे हाथ-पएर धोइ शिवालयमे शिव दर्शन करब, पछाइत बैसब।”

तीनू गोरे सएह केलैन। सौंसे गौंआँ मिलि एकठाम भनसो केलैन आ सभ मिलि एकठाम बैस खेबोक विचार

केलैन। बेरू पहर आमसभा भेल, जइमे गामक सभकियो शामिल भेला। अध्यक्षता मणिशंकर केलैन। भाषण शुरू होइते राधा मणिशंकरकेँ कहलैन- “पहिने समाजक लोक अप्पन विचार राखैथ, पछाइत हमसभ बाजब।”

सएह भेल। गामक किछु लोक मंचपर आबि अप्पन दिनानुदिनक समस्याक चर्च केलैन। पछाइत सुलक्षणी बजली- “समस्या जटिल अछि। बाहरक लोकसँ ई नहि सोझराएत। जाधैर गामक लोक स्वयं डेग नहि उठेता ताधैर जहिना अखन तक दर-दर भटकैत रहल छैथ तहिना आगूओ भटकैत रहता।”

सुलक्षणीक विचार सुनि गौंआँसभ एक-दोसराक मुँह दिस ताकए लगला, जेना किनको मनमे विचार गड़िये ने रहल छेलैन। गड़बो केना करितैन? एक तँ पहाड़ी इलाकाक गाम, दोसर अखन तकक जे जीवन रहलैन ओ तँ अपने तक समटल रहलैन।

अप्पन विचार व्यक्त केलाक बाद सुलक्षणी बैस रहली। सभामे उपस्थित पुरुष-नारी एक दोसरासँ गप-सप्प करए लगलैथ जे आइ धरि जे विचार नहि सुनने छेलौं से विचार सुनलौं हेन। ओना, किछु गोरेक मनमे

नीक जकाँ विचार समेलैन आ किछु गोरे नीक जकाँ बुझबो ने केलाह जे सुलक्षणी की बजली।

ओना, गौंआँसभक मुहेँ जे विचार राधो आ श्यामो सुनलैन तइ विचारकेँ दुनू गोरे मने-मन धुनलैन। जहिना राधाक मनमे भेलैन जे, जे समस्या समाजक बीच पसरल अछि ओ समस्या सिर्फ समाजेसँ नहि सोझराएत, किएक तँ ओ शासनसँ सेहो जुड़ल अछि। गाम-घरमे एहेन कहबियो अछिए जे घर फुटै गमार लुटै। जखने समस्याक समाधान ले संगठित भऽ गौंआँ-घरूआ उठिकऽ ठाढ़ हेता तखने सरकारी तंत्र ओकरा रोकबे करत। जखने कोनो काजक आगूमे बाधा-रूकावट अबैए तखने ओ कठिन भइये जाइए, तइले गौंआँ सभकेँ मजगूतीसँ ठाढ़ हुअ पड़तैन। मुदा, मजगूतीसँ ठाढ़ तखने भऽ सकै छैथ जखन विचारमे मजगूती औतैन। विचारमे मजगूती तखन औतैन जखन अप्पन जीवनक बाधाक गहन अनुभव हेतैन। तइले जरूरी अछि जे वैचारिक रूपमे जीवनकेँ मजगूत बनौल जाए। वैचारिक रूपमे लोक (समाज) जेतेक मजगूत हेता तेते हुनकर आत्मबल जगतैन आ जेतेक आत्मबल जगतैन तेतेक लड़ैले तैयार हेता। अखन तकक जे समाज अछि ओ धीरे-धीरे दूषित

होइत-होइत तेते दूषित भऽ गेल अछि जे ओकर सफाइ आसान नहियेँ अछि। मुदा ईहो तँ सत्य अछिए जे जँ मनुक्ख अप्पन दृढ़ संकल्पक संग ओइ 'सामाजिक बुराइ'केँ मेटबए चाहता तँ जरूर मेटाइये सकै छैथ।

सुलक्षणीक भाषण सम्पन्न भेलाक बाद श्याम उठिकऽ ठाढ़ होइत समाजकेँ सम्बोधित करैत बजला-

"बन्धुगण, जखन अहाँसभ अप्पन जीवनक बाधाकेँ मेटबैले आगू बढ़ब तखन सरकारो चुपचाप बैसकऽ देखैत नहि रहत। ओहो अप्पन शक्तिक अनुरूप आगूमे ठाढ़ हेबे करत, तँए ओइ अनुरूप अपनाकेँ बनबए पड़त। ई बात सत्य अछि जे जे समस्या (बाधा) अहाँक जीवनक संग उपस्थित भेल अछि, बिना ओकरा मेटौने अहाँक कल्याण नहि हएत। ईहो बात सत्य अछि जे जइ रूपेँ अहाँसभ उठिकऽ ठाढ़ भेलौं हेन, ओ आब खाली दाउ-पेंचक नहि रहल। आब ओ जुआ कऽ आन्दोलनक रूप लऽ रहल अछि। सामने-सामनी ठाढ़ भऽ अप्पन मुक्ति पेबाक समय आबि गेल अछि।"

श्यामक विचार सुनिते सभामे थोपड़ीक गड़गड़ाहट शुरू भेल, जे बड़ीकाल धरि गड़गड़ाइत रहल। अप्पन विचार व्यक्त केलाक बाद श्याम बैस रहला।

श्यामकेँ बैसलाक बाद राधा उठिकऽ ठाढ़ भेली। राधाकेँ उठिकऽ ठाढ़ होइते सभाक लोक थोपड़ी बजा स्वागत केलकैन। थोपड़ी बन्न भेलाक बाद राधा बजली-

“भाय-बहिन.! अहाँ समाजमे सभसँ पैघ गुण अछि जे सभकियो एकमुँहरी छी। माने आन समाज जकाँ शोषक-शोषित नहि छी, जैठाम से रहैए तैठामक परिस्थिति आ जैठाम से नहि रहैए तैठामक परिस्थितिमे अन्तर होइते अछि। तँए, अहाँसभक कल्याण निश्चित हएत। मुदा एकटा विचार धियानमे सदिकाल राखए पड़त जे रंग-रंगक लोभ शासन दिससँ देखौल जाएत, तैपर विश्वास नहि करब। सरकारक नेतमे इमानदारी नहि अछि, ओकर कथनी आ करनीमे अकास-पतालक अन्तर अछि। अहाँक संग छी, अप्पन कल्याण अपना हाथमे अछि।”

❑

शब्द संख्या: 1731, तिथि: 18 अक्टूबर 2024

सुखाइत जीवन

➢ ❄ ➢

क्लास चलि रहल छल। नौमा क्लासमे पढ़बैत शिक्षककेँ लगमे आबि चपरासी फुसफुसा कऽ कहलकैन-

“हेड मास्टर सहाएब कहलैन अछि जे गणेशीकेँ छुट्टी दऽ दियौ।”

जहिना चपरासी शिक्षककेँ कहलकैन तहिना शिक्षक गणेशीकेँ कहलखिन-

“गणेशी, एमहर आ।”

लगमे अबिते गणेशीकेँ कहलैन-

“तोरा छुट्टी दइ छियौ।”

विद्यालय कोनो होइ, उच्च विद्यालय होइ कि मध्य विद्यालय आकि प्राथमिक विद्यालय, साधारण छात्रकेँ छुट्टी पेबिते जहिना खुशी होइए तहिना गणेशीकेँ सेहो

भेल। अप्पन किताब-कॉपी नेने गणेशी विदा भेल।

अखन तक गणेशी ई नइ बुझने छल जे दुर्घटनामे हम्मर माता-पिताक मृत्यु भऽ गेल अछि।

गणेशीकेँ स्कूल गेलाक बाद अलोधनी (गणेशीक माए) आ यशोधर (पिता) संगे बाजार जा रहल छेलैथ। रास्तामे दुनूकेँ ट्रकसँ चप्पा पड़ि गेलैन। ट्रकक ड्राइवर दारू पीने बेमत्त छल। चप्पा पड़िते ड्राइवर दुनूकेँ छोड़ि पड़ा गेल। दोसर-तेसर कियो ने देखलक आ ने ड्राइवरे गाड़ी रोकलक। बाजारक रास्ता, लोकक आबा-जाही रहबे करइ। थोड़बेकालक बाद एक गोरे बाजारसँ घुमल अबैत रहए, वएह देखलक। देखलक जे सड़कपर दू गोरे गाड़ीसँ चप्पा पड़ि मरि गेल अछि। लहासकेँ चिन्हलक नहि, किएक तँ चक्का तरमे दुनू तेना दबा गेल जे शरीर छत-बिछत भेल पड़ल अछि। लहास लग ठाढ़ भऽ ओ आदमी हल्ला केलक। हल्ला सुनि चारू दिसक लोक आ बाजार जाइत-अबैत लोकसभ सेहो एका-एकी जमा हुअ लगल। गाड़ी (ट्रक)केँ कियो देखलक नहि, किएक तँ ड्राइवर अप्पन जान बँचबैक खियालसँ गाड़ी रोकलक नहि, आरो तेज गतिसँ पड़ाएल।

एक्के-दुइये लोक जमा होइत-होइत मेला जकाँ

करमान लगि गेल। लहासकेँ उनटा-पुनटा देखलक तखन चिन्हलक जे राघोपुरक दुनू परानी यशोधर छी।

बैशाख-जेठक हवामे लगल आगि जकाँ समाचार चारू दिस पसैर गेल। वएह समाचार राघोपुरसँ कोस भरि हटल हाइ स्कूलक शिक्षक सभक बीच सेहो पहुँचल छेलैन।

ओना, हाइ स्कूलमे एगारह टा शिक्षक छैथ, समाचार तँ सभकियो सुनलैन, मुदा स्कूलक प्रधानाध्यापक बेसी प्रभावित भेला। एतेक प्रभावित भऽ गेला जे हुनका देहमे थरथरी आबि गेलैन। एक तँ अप्पन स्कूलक छात्रक माता-पिता, दोसर अपने नि:सन्तान सेहो छैथ। ओना, एगारहो शिक्षककेँ अप्पन-अप्पन परिवार छैन्हे, आन-आन शिक्षकक आन-आन रूप छैन मुदा हेमन्तबाबूक परिवारक रूप सभसँ भिन्न छैन। एगारहो शिक्षकमे किछु गोरेक परिवार एहेन छैन जे परिवारसँ दिन-राति तंग रहै छैथ मुदा हेमन्तबाबूकेँ परिवारक दोसर चिन्ता छैन। हुनकर चिन्ता छैन नि:सन्तान हेबाक। संयोग एहेन भेल छैन जे भैयारीमे असगरे छैथ।

स्कूलक शिक्षको सभ आ गाम-समाजोक लोक

हिनका बहुत कहलकैन जे दोसर बिआह कऽ लिअ, मुदा हेमन्तबाबू किनको विचार नहि मानलैन। आब तँ सहजे पचपन-छप्पन बर्खक उमेर भऽ गेलैन अछि।

दुनू परानी यशोधरक मृत्यु सुनि हेमन्तबाबू जेना संवेदनशून्य भऽ गेला। सकदम्म भेल हेमन्तबाबूक मनमे अनेको रंगक विचार बरखा-पानिक बुलबुला जकाँ अपने उठबो करैन आ अपने फुटबो करैन। गणेशी जेना हिनका हियमे गड़ि गेलैन। माता-पिता जहिना बच्चाक जन्मदाता गुरु होइ छैथ तहिना ज्ञानदाता गुरु शिक्षक सेहो होइते छैथ। मन कहलकैन, गणेशी भलेँ यशोधरक सन्तान छी मुदा अपनो तँ बेटातुल्य छात्र सेहो छीहे। आब ओइ बच्चाक की दशा हएत? घटनाक गहराइमे जेतेक हेमन्तबाबू पहुँच रहल छला तेतेक हुनकर मन उद्विग्न भेल जा रहल छेलैन। देहमे थरथरी सेहो बढ़ले जा रहल छेलैन। अन्तमे विद्यालयमे छुट्टी दऽ देलखिन। विद्यालयमे छुट्टी भेलाक बाद शिक्षको सभ आ छात्रो सभ तँ अप्पन-अप्पन घर दिसक रास्ता पकड़लैन मुदा हेमन्तबाबू गणेशी ऐठाम विदा भेला। ओना, अप्पन परिवारक कियो कननिहार यशोधरकेँ नहि छेलैन मुदा गाम-समाजक लोक जरूर कानि रहल छल। बाल-बोध

गणेशी अदंकसँ चेतनशून्य जकाँ भऽ गेल छल। मुहसँ किछु निकैल नहि रहल छेलइ। समाजो तँ समाज छीहे। आजुक मनुक्खमे केतबो एकाकीपन किए ने आबि गेल अछि मुदा तैयो एतेक सामाजिकता तँ जीवित अछिए जे एहेन-एहेन बेर-बिपैतमे लोक एक-दोसराक आगूमे ठाढ़ होइते छैथ। एक गोरे कफन आ कुर्ताक कपड़ा खातिर रुपिया देलखिन। एक गोरे कपड़ा अनैले बाजार गेला। एक गोरे चचरी बनबैले बाँस देलखिन। एक गोरे लहासकेँ जरबैले जरना गछि लेलखिन। ऐ तरहेँ लहास जरबैक सभ ओरियान देखिते-देखिते भऽ गेल।

लहास जरौलाक बाद कर्ताक सभ ओरियान सेहो समाजेक लोक कऽ देलखिन। विधिवत दुनू परानी यशोधरक श्राद्ध-कर्म भेलैन।

दुनू परानी- यशोधरक मृत्युक आइ पनरहम दिन छी। काल्हि सत्यनारायण भगवानक पूजा सेहो सम्पन्न भऽ गेल। गणेशीक मामा-मामीक आ पिसियौत भाय मात्र अखन तक राधोपुरमे छैथ। अपनामे, माने गणेशीक मामा-मामीक संग पिसियौत भाइक बीच, विचार-विमर्श चलि रहल छल जे आगूक लेल गणेशीकेँ की हेबा चाही.? ओना, आर्थिक दृष्टिसँ दुनू परिवार, माने मामो

आ पिसियौत भाइयोक परिवार ओतेक नीक नहि जे गणेशीक खर्च उठा ओकरा आगू पढ़ा सकता। मुदा एते तँ मनमे रहबे करैन जे गणेशी तेरह-चौदह बर्खक भइये गेल अछि, अपनो नोकरी-चाकरी करिकऽ जीवन चला सकैए। जखन भगवान एहेन बिपैत वेचाराकेँ दऽ देलखिन तखन कहुना-ने-कहुना जीवित रहैक तँ छइ। जखन छेँटगर हएत तखन बिआह-दान हेतै, अप्पन परिवार हेतै, अपना गाम-घरमे रहत। दुनूक बीच, माने गणेशीक मामा आ पिसियौत भाइक बीच गप-सप्प चलिये रहल छल कि तैबीच गोपीनाथ आएल। अबिते गोपीनाथ गणेशक मामाकेँ कहलखिन-

“चारिम दिन हम मुम्बइ जाएब, गणेशीकेँ अपना संग नेने जेबइ।”

गोपीनाथ गामक एकटा नवयुवक। जहिना शरीरसँ हट्ठा-कट्ठा तहिना विचारसँ सेहो कर्मठ आ इमानदार अछि। दस बर्खसँ मुम्बइमे रहैए। शुरूमे, माने पहिले-पहिल जखन गोपीनाथ मुम्बइ गेल, तखन बेसी पढ़ल-लिखल नइ रहने लिखा-पढ़ीक नोकरी तँ नइ भेलै मुदा कारखानामे श्रमिकक नोकरी भऽ गेलइ। गोपीनाथ जहिना काज करैमे पीच्छड़ तहिना चरित्रसँ इमानदार

सेहो अछिए। तीन साल बीतला पछाइत गोपीनाथकेँ सेठ, माने कारखानादार, कारखानासँ अप्पन कोठीक काजमे लऽ अनलक। कोठीमे अबिते परिवारेजन जकाँ गोपीनाथ सेहो रहए लगल। अपने परिवार जकाँ गोपीनाथ काज करए लगल। सेठक एहेन विश्वासपात्र गोपीनाथ भऽ गेल जे परिवारे जन जकाँ सभ किछु सेठ सुमझा देलखिन। तेसर कियो ई नइ बुझैत जे गोपीनाथ नोकर छी। आन नोकर जकाँ सेठ गोपीनाथकेँ दरमाहाक रूपमे निश्चित रकम नइ दइ छथिन। खाँहिसक हिसाबसँ मुँहमंगा दइ छथिन।

गोपीनाथक विचार सुनि गणेशीक मामा कहलकैन-

“हम भलेँ गणेशीक माम छी मुदा अहाँ तँ समाजक भाय-बन्धु छिऐ। जहिना हमरा मनमे अछि जे गणेशीक बिलटैत परिवार कहुना जीवित रहए तहिना तँ अहूँक मनमे अछिए। तँए जँ गणेशीकेँ आगू ठौर भेट जाइ तँ मुम्बइ लऽ जाइमे कोनो हर्ज नहि।”

गणेशीक मामाक विचार सुनि पिसियौत भाय गंगाराम कहलखिन-

“गोपीनाथ, एक गड़ूकेँ बहत्तैर आशा होइ छै।

कनियोँ-कनियोँ जँ सभकियो गणेशीकेँ मदैत कऽ देबै तँ बेचाराक जीवन उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाएत। भेल तँ तेरह-चौदह बर्खक अछिए, पाँच-सात बरख जँ दोसराक सहारा भेट जाइ तँ गणेशीक परिवार फेर ओहिना बनि जाएत जहिना अखन तक जीवित माता-पिताक बीच छेलइ।”

गोपीनाथ मने-मन विचारि रहल छल जे समाजमे लोक भीखकेँ दान बुझि एक मुट्ठी अन्न वा एक मुट्ठी खाइले दइए तँ ओ होइए दान, मुदा केकरो जीवन सुधारि देब, ओ तँ ओहोसँ पैघ दान भेल किने। जँ हमरा केने गणेशीक जीवन सुधैर जाएत तँ हमरा लेल ऐसँ बेसी धर्मक काज की भऽ सकैए। गोपीनाथ गणेशीकेँ कहलक- “बौआ, तोरा कोनो चीजक ओरियान नइ करैक छौ, सभ बेवस्था हम करब। परसू गाड़ी पकड़ैले तहूँ तैयार होइहेँ।”

गोपीनाथक विचार सुनि गणेशीक मामा सेहो गणेशीकेँ कहलखिन-

“बौआ, आइ हमरा संगे चल, काल्हि भरि रहिहेँ आ परसू चलि अबिहेँ।”

मामाक संग गणेशी मात्रिक चलि गेल।

तेसर दिन गणेशी मात्रिकसँ आबि गोपीनाथक संग मुम्बइ विदा भेल।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। मुम्बइ पहुँचलापर गोपीनाथ अप्पन सेठकेँ सभ बात कहि गणेशीकेँ अपने संग नोकरी रखा देलक। गणेशी नोकरी करए लगल।

सात दिन तक गोपीनाथ गणेशीकेँ किछु ने कहलक। आठम दिन, साँझू पहरमे जखन दुनू गोरे काजसँ निचेन भेल तखन गोपीनाथ गणेशीकेँ कहलक-

“बौआ गणेश, अखन तूँ बाल-बोध छँह, ई मुम्बै छी, तँए लहक-चहकमे नहि पड़ि अप्पन जीवनकेँ बनबैमे लागि जो।”

गणेशी बाजल-

“भैया, अहाँ जे कहब हम सएह करब।”

गोपीनाथ-

“दिन भरि काज कर। राति-के तँ कोनो काज नहि रहतौ। तीन घन्टा, चारि घन्टा पढ़-लिख। एते दिन ने गाममे माता-पिताक भरोसे जीबै छेलँह, आब तँ ओ नहि

छथुन तँए अपना भरोसे जीबैक रास्ता पकड़।”

गोपीनाथक विचार गणेशी मानि अप्पन जीवनक पाछू अपनाकेँ लगा देलक।

समय बीतैत गेल। देखिते-देखिते गणेशीकेँ पाँच बरख मुम्बइमे भऽ गेल। अखन तक गणेशी ने एको मासक दरमाहा उठौलक आ ने अपना पाइसँ लता-कपड़ा कीनलक। सभ जोगार गोपीनाथ सेठकेँ कहि करैत रहल। ऐ पाँच सालमे गोपीनाथ तँ तीन-चारि बेर गाम एबो कएल मुदा गणेशी एको बेर गाम नहि आएल।

पाँच बर्खक पछाइत गणेशी जवान भऽ गेल। पाँचो सालक दरमाहाक हिसाब केने बिना गोपीनाथ सेठकेँ कहलखिन-

“मालिक, गणेशीक घर बसा दियौ।”

हँसैत सेठ गोपीनाथकेँ कहलखिन-

“बड़बढ़ियाँ।”

फुटि कऽ जवान भेल गणेशी गोपीनाथक संग गाम आएल। गाममे तीन कोठरीक मकान बनौलक। मकान बनेलाक बाद बिआहक दिन सेहो तय भऽ गेलइ। बरियाती चलैले गणेशी, जइ स्कूल छोड़ि मुम्बइ गेल

छल तइ स्कूलक सभ शिक्षककेँ, स्कूलपर जा हेमन्तबाबूक सोझामे आग्रह केलकैन। हँसैत हेमन्त बाबू बजला-

“गणेशी, तोहर सुखाएल जीवनमे नव कशल कलैश रहल छह, तँए दोसर कियो बरियाती जाथि वा नइ जाथि, हम जरूर जेबह।”

❑

शब्द संख्या: 1350, तिथि: 21 अक्टूबर 2024

मौन

बिराटनगरसँ एना तीन दिन भऽ गेल, मुदा अखन तक फचाँइर काकासँ भेँट नइ भऽ सकल। मनमे शंका भेल जे ओ भरिसक गाममे नहि छैथ चाहे मन-तन खराब छैन। पता लगेलौं तँ पता लगल जे गामेमे छैथ आ मनो खराब नहियेँ छैन।

जाबे गाममे रहै छेलौं, माने दस बरख पूर्व धरि, जाबे बिराटनगर नइ गेल रही तँ घन्टा-दू-घन्टा एकठाम बैस दुनू गोरे अप्पन बेकतीगत क्रिया-कलापसँ लऽ कऽ परिवार, समाज आ देश-दुनियाँक गप-सप्प सेहो करैत रही। ओ स्मृति अखनो ओहिना मनमे जीवित अछि। मुदा जहियासँ बिराटनगरमे रहए लगलौं तहियासँ सालमे मुश्किलसँ पच्चीस-तीस दिन गाम आबि रहै छी, तहूमे कोनो काजे-उदेममे अबै छी, जइसँ ओही पाछू माने काजेक पाछू बेसी समय लगि गेने फचाँइर काकासँ गप-

सप्प करैले समये कम बँचैए। मुदा जएह बँचैए तहीमे समय निकालि गप-सप्प करिते आबि रहल छी। जइसँ मनमे ताजगी बनल रहिते आबि रहल अछि।

फचाँइर काका गाममे सभसँ अधिक बजन्ता लोक छथिए। कोनो बात हुनका लग चालि दियौ, घन्टा भरि ओ बिना कौमा, फुलस्टॉपे ओ एकसूरे बजैत रहता। अहाँक प्रश्नक उत्तर दऽ रहला अछि आकि अप्पन मनक विचार राखि रहला अछि, तेकर ठेकान-बे-ठेकान केने बिना ओ बजैत रहता। भलेँ ओ अप्पन सासुरेक खिस्सा किए ने दोहरबैत-तेहरबैत रहैथ। तैसंग ईहो गुण आकि अवगुण हुनकामे छैन्हे जे बिनु पुछनौं, अपनो दिससँ, सोझामे पड़िते बाजए लगै छैथ। ओना, किछु गोरे ईहो कहिते छैन जे फचाँइर काका अपने मने अनेरे बड़बड़ाइत रहै छैथ। केते गोरे ईहो कहै छैन जे बेसी फुसिये बजै छैथ। आन जे कहैत होनि मुदा अपने से नहि मानै छिऐन। फचाँइर काका कहुना हेता तँ अपनासँ अट्ठारह-बीस बरख उमेरमे पैघ हेबे करता। तँए, अप्पन मन गबाही दइते अछि जे फचाँइर काका उमेरे टामे नहि, अपनासँ बेसी दिनो-दुनियाँ आ दुखो-सुख देखनहि-भोगनहि छैथ, तँए झूठ किए बजता। मोटा-मोटी यएह बुझू जे फचाँइर

काका सन लोक अपने गाम टामे, माने किसानेपुर टामे नहि छैथ, आनो-आन गाममे छथिए।

फचाँइर काकाकेँ गाममे केते गोरे ‘फचाँइर काका’, ‘फचाँइर भैया’, ‘फचाँइर भाय’ कहै छैन तँ केते गोरे ‘फचाँइर बाबा’ सेहो कहिते छैन। मोटा-मोटी यएह बुझू जे दियादी रूपमे हुअए आकि सामाजिक रूपमे, जिनकर जे सम्बन्धक रूप छैन से तइ अनुकूल सम्बोधित करै छैन मुदा ‘फचाँइर’ सभकियो कहिते छैन। ओना, हिनकर असल नाओं ‘रौदीलाल’ छिऐन मुदा जहिना शास्त्र-पुराणक ज्ञाता ‘पण्डित’ कहबै छैथ, विद्यालयक शिक्षादाता ‘शिक्षक’ कहबै छैथ तहिना बेसी बजन्ता रहने हिनका शुरूहेसँ, माने जहिया ई लोअर प्राइमरी स्कूलमे पढ़ैत रहैथ तहियेसँ, लोक ‘फचाँइर’ कहैत आबि रहल छैन। समाजक लोक जे जे कहौन मुदा अपने फचाँइर कक्के कहै छिऐन।

तीन दिन पूर्व गाम एलाक पछातियो जखन फचाँइर काका भेँट नहि भेला तँ अपना मनमे जेना उड़ी-बिड़ी लागए लगल। तँए आइ नियारि कऽ हुनकासँ भेँट करैक विचार केलौं। विचार करैतकाल मनमे उठल, जे बेकती सभ दिन भेँट होइ छला, सभ दिन कि दिनमे तीन-तीन-

चारि-चारि बेर भेँट होइ छला तैयो घन्टा-दू-घन्टा हुनकर गप-सप्प सुनैमे लगि जाइत रहए, मुदा आइ तँ साल भरिसँ भेँट नहि भेला अछि तँए केतेक समय लागत केतेक नहि। मने-मन विचारि लेलौं जे नीक हएत जे साँझू पहरमे भेँट करिऐन। साँझमे एते तँ हेबे करत किने जे अपनो बुझता खाइ-पीबै-सुतैक बेर भऽ गेल। मने-मन निर्णय कऽ लेलौं जे आइ साँझमे हुनकासँ भेँट करबैन।

फचाँइर कक्काक घर अपना घरसँ बीघा पाँचेक करीब हटल अछि। एक तँ इजोरिया राति, दोसर बिजली आबि गेने रातियो दिने जकाँ लगैए आ तैसंग एकटा ईहो लाभ भेबे कएल अछि जे रस्ताकातमे जे झमटगरहा पाखरिक गाछ छल, जइपर भूत रहै छेलै, सेहो कटि गेल, तँए रस्ता चलैमे कोनो बाधा सेहो नहियेँ रहल।

दोसर साँझ बित गेल छल। फचाँइर काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। दस लग्गा आगू बढ़लौं कि आगूए दिससँ एक गोरेकेँ अबैत देखलयैन। चेहरा तँ देखलयैन मुदा चीन्हिमे नइ एला। वएह बजला-

“गाम कहिया एलह, गंगाराम?”

बोली अकानमे आबि गेल जइसँ बुझि गेलौं जे

राजिन्दर भाय छिया। बजलौं-

“परसू एलौं। अपना दिसक की हाल-चाल अछि राजिन्दर भाय?”

राजिन्दर भाय बजला-

“बढ़ियाँ अछि। केमहर-केमहर चललह अछि?”

बजलौं-

“कने फचाँइर काकासँ भेँट करए जा रहल छी। बाल-बच्चा, गाम-घरक हाल-चाल ठीक अछि किने?”

राजिन्दर भाय बजला-

“गाम-घरक की हाल-चाल रहत, गंगाराम। जे मड़ुआ रोटी लोक खाएब बिसैर गेल छल, अखन तेकरे ढिढोरा पड़ि रहल अछि। जहिना बाबू-भैया अपना नामक पाछूमे ‘श्री’ लगा बजबो करै छैथ आ लिखबो करै छैथ तहिना मड़ुआ सेहो अपना नामक पाछू ‘श्री’ लगा फेरसँ पदासीन भऽ रहल अछि।”

राजिन्दर भाइक विचार सुनि मनमे हँसी लागल जे जे मड़ुआ पहिने गरीब-गुरबाक खान-पानमे छल से आब बाबू-भैयाक खान-पान बनल जा रहल अछि.! मुदा से सभ किछु ने बाजि एतबे बजलौं- “भाय साहैब! गाम-

घरमे मौगी-मेहैर बजैए, ‘अपना मनक मौजी, बहुकेँ कहलौं भौजी’।”

राजिन्दर भाय बजला-

“हँ, सभ अप्पन-अप्पन मनक मालिक अछिए। जेकरा जे मनमे अबै छै से सएह करबो करैए आ बजबो तँ करिते अछि। छोड़ह ऐ सभ गप-सप्पकेँ। रहै तँ छह बिराटेनगरमे किने?”

कहलयैन- “हँ।”

राजिन्दर भाय बजला-

“पहिलुका लोकसभ धान, पटुआ काटैले पएरे बिराटनगर जाइ छला। कियो-कियो बनिया-बेकाल ऐठाम सेहो खटै छला। तहिया गाड़ी-सवारी नइ छल, लोक पएरे बिराटनगर जाइ छला। आब तँ सभ तरहक साधन भऽ गेल अछि। देखिते छी जे लेबरो क्लासक लोक हवाइ जहाजसँ यूरोपक देश, अमेरिका अरब जगत जाए लगला अछि आ तूँ बिराटनगरक बिराटेनगरमे अखनो रहै छह?”

बजलौं- “भाय, अहाँकेँ तँ बुझले अछि जे अपने केते धार्मिक लोक छी। एहेन देश छोड़ि अधर्मी देशमे नोकरी

करए जाएब। बिराटनगर सन जगह हुअए। धार्मिक देशक शहर छी बिराटनगर।”

राजिन्दर भाय बजला- “से केना?”

बजलौं-

“भाय, अहाँ बिराटनगर नै गेलौं हेन तँए नइ देखलिऐ। ओइठाम देखबै जे जहाँ-तहाँ धर्म स्थान सह-सह कऽ रहल अछि। बैरक गाछमे सेहो ललका लत्ता बान्हि लोक फूल-पातसँ पूजो करैए आ अप्पन मनता सेहो करैए। ओइठाम केतौ, सड़को कातमे देखबै जे पाथरक टुकड़ा राखल अछि आ ओहूपर फूल-पात चढ़ा पूजा-पाठ कएल अछि। आब अहीं कहू जे एहेन धर्मभूमि छोड़ि दोसर देश जा नोकरी करी से हमरा लेल उचित हएत?”

राजिन्दर भाय किछु बजला नहि। अपना बुझि पड़ल जेना हुनकर मन अकछा रहल छैन। ओना, आगूमे ठाढ़ छला तँए केना कहितैथ जे तोहर विचार नइ सुनब। धड़फराइत बजला-

“गंगाराम, एकटा काजे अखन जा रहल छी। देरी भेने हूसि जाएत। अखन तोहूँ फचाँइर काकासँ भेँट करए

जा आ हमहूँ जाइ छी। काल्हिखन निचेनसँ गप-सप्प करब।”

ओतएसँ आगू बढ़लौं। फचाँइर काका दरबज्जेपर रहैथ। हुनका लगमे पहुँच बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी.!”

बिना किछु बजनहि फचाँइर काका मुड़ी झुका असीरवादो देलैन आ आँखियेक इशारासँ बैसैले सेहो कहलैन।

फचाँइर कक्काक बेवहार देखि अपना मेनमे शंका भेल जे भरिसक मन-तन खराब भऽ गेल छैन तँए बजैमे असोकर्ज भऽ रहलैन अछि। पुछलयैन-

“काका, मन-तन गड़बड़ अछि?”

फचाँइर काका बजला-

“एते दिन, माने पहिने मन गड़बड़ रहै छल मुदा आब सभकिछु ठीक भऽ गेल।”

फचाँइर कक्काक विचार कोनो भाँजेपर नइ चढ़ल। बजलौं-

“काका, अहाँक विचार नइ बुझि पेलौं।”

एकाएक फचाँइर काका जेना गम्भीर भऽ गेला

तहिना गम्भीर स्वरमे बजला-

“बौआ, जहिना बजैक मूल्य अछि तहिना नइ बजैक माने मौन रहैक मूल्य सेहो अछि। देखबहक जे जैठाम दूटा आत्मज्ञानी साधक एकठाम हेथुन तैठाम मुँहक बोल कमि हाव-भाव बढ़ि जाइए। माने ओतए मौखिक क्रियासँ बेसी बेवहारिक क्रियाक महत्व भऽ जाइए।”

फचाँइर कक्काक भाव-विचारकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए, पुछलयैन-

“काका, नइ बुझि पेलौं अहाँक विचार?”

अप्पन विचारकेँ नीक जकाँ बुझबैक खियालसँ फचाँइर काका हमरा पुछि देलैन-

“कबीरदासक नाम सुनने छह?”

कहलयैन-

“हँ। मध्ययुगमे जहिना राम भक्त तुलसीदास आ कृष्ण भक्त सूरदास सगुण सम्प्रदायक भेला, तहिना निर्गुण सम्प्रदायक कबीरदास आ मल्लिक मुहम्मद जायसी सेहो भेला। ओना, कबीर ज्ञानमार्गी छला जखन कि जायसी प्रेममार्गी।”

मुड़ी डोलबैत फचाँइर काका बजला- “हँ, तखन

काशीक एकटा घटना कहै छिअ।”

‘काशी’ सुनि साकांच भेलौं। किए तँ काशी सभ दिनसँ विद्वानक ठट्ठ मानल जाइत रहल अछि। ओइठाम विद्वत परिषद छल जइमे पाँच साए विद्वान रहैथ। पाँचो साए विद्वान एक-एक विषयक विशेषज्ञ.! बजलौं-

“की घटना?”

फचाँइर काका बजला- “एक दिन फरीद काशी एला। फरीद आत्मज्ञानी छला। फरीदक आगमनक जानकारी सभकेँ छेलैन। कबीरदासक स्थान सेहो काशीमे अछि। कबीरक जे सहयोगी चेलासभ रहैन ओ कबीरकेँ कहलकैन- ‘गुरु महराज, फरीद आबि रहला अछि तँए हुनकासँ दरस-परस हेबा चाही’। कबीरदास चेलासभक विचार मानि लेलैन। हुनकर जे स्थान छेलैन ओही रस्ते होइत फरीद अप्पन समर्थकक संग आबि रहल छला। हुनका टपैसँ पहिने कबीरदास अपनो आ हुनकर समर्थकसभ सेहो- सभकियो रास्तापर आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेला। फरीदकेँ सेहो कबीरदासक जानकारी रहबे करैन। जखन फरीद कबीरक सोझामे पड़ला तँ आँखिक इशारासँ कबीर अप्पन स्थानमे रूकैक आग्रह केलकैन।”

फचाँइर कक्काक विचार सुनि मन तेते उताहुल भऽ गेल जे बिच्चेमे मुहसँ निकैल गेल-

“वाह! वाह!”

फचाँइर काका आगू बजला-

“तीन दिन तक फरीद आ कबीर आमने-सामने रहला मुदा दुनू गोटाक बीच मुहसँ कोनो गप-सप्प नइ भेलैन।”

फचाँइर काका चुप भऽ आगू किछु ने बाजि रहल छला। हुनका चुप देखि अपनो बजलौं-

“काका, ठकुरबाड़ीमे सौंझुका घड़ी-घन्ट बाजि गेल, आब दोसर दिन गप-सप्प करब।”

फचाँइर काका बजला-

“अन्तिम बात कनी कहि दइ छिअ। विस्तारसँ आन दिन गप्प-सप्प करब। एते दिन, माने साल-डेढ़-साल पूर्व तक बजैक रोग पकड़ने छल तँए अनेरो किछु-सँ-किछु बजैत रहै छेलौं। मुदा संगत पेब आत्म तत्त्वक बोध भऽ गेल, तँए आब मौन रहबाक गुण बुझि रहल छी।”

बजलौं-

“मौन रहैक की गुण अछि, काका?”

फचाँइर काका बजला-

“विस्तारसँ आन दिन कहबह। अखन एतबे बुझह जे मौनसँ ज्ञानशक्ति बढ़ैए। ज्ञानशक्ति बढ़ने निर्विचारता अबैए। विवाद मुक्त जीवन बनैए आ तैसंग अहंकार सेहो मनसँ मेटा जाइए, जइसँ अप्पन सुरक्षा अप्पन शक्तिसँ हुअ लगैए। बस! आइ एतबे।”

❑

शब्द संख्या: 1477, तिथि: 24 अक्टूबर 2024

उनटा बसात

प्रकृतिमे जहिना गुण-अवगुण दुनू अछि तहिना मनुक्खक सोभावमे सेहो अछि। मनुक्खक सोभावमे जखन गुण बाहुल्य भऽ गुणक प्रचुरता होइए तखन जहिना प्रकृतिमे अनुकूल हवा चलने मौसम सुहावन लगए लगैए तहिना ओहो मनोरम भऽ जाइए। मुदा जहिना प्रतिकूल हवा चलने मौसम कष्टकर लगए लगैए तहिना अवगुणक बाहुल्य भेने मनुक्खक सोभाव सेहो दुखकर-कष्टकर भइये जाइए।

प्रकृति जहिना गुण-अवगुणक बीच चलैए तहिना मनुक्खक सोभाव सेहो चलिते अछि, जइसँ नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो रूप पकैड़िते अछि। एहेन कोनो आइये भेल अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ हेबे करत। हँ, तइमे एते जरूर होइए जे गुणक बाढ़ि एने कोनो समयमे

नीके-नीक होइए आ गुण घटने कोनो समयमे अधले-अधला होइए।

श्यामबाबू दुनू परानी शिक्षक-शिक्षिका छैथ। श्यामबाबू मिडिल स्कूलक शिक्षक छैथ आ अनुराधा हाइ स्कूलक शिक्षिका छथिन। ऐठाम ई नइ बुझब जे श्यामबाबूक डिग्री पत्नीसँ कम छैन आ अनुराधाक डिग्री पतिसँ बेसी छैन। श्यामबाबू एम.ए. पास छैथ आ पत्नी बी.ए., बी.एड. छथिन। देश हौ आकि राज्य, नोकरीक समस्या आइये नहि सभ दिनसँ रहलो अछि आ आगू कहिया तक रहत तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। आजादीक समयमे, माने देशक सत्ता जखन अंगरेजी शासनसँ छीनल जाए लगल तखन जन-गणक आवाज छेलैन जे ‘दालि-भात-तरकारी सभ धन सरकारी’। मुदा से देशक सत्ता बदलला पछाइत लोक बिसैर गेल। आब तँ ओ विचार सहजे इतिहासक पन्नामे झँपाएल पड़ल अछिए। खाएर जे अछि, देशक सत्ता तँ देशवासीक हाथमे अछिए।

जहिया श्यामबाबू एम.ए.मे पढ़ै छला तहिया हुनका मनमे सोल्होअना छेलैन जे कोनो कौलेजक प्राध्यापक बनबे करब। हुनका मनमे कहियो ई नइ एलैन जे हाइ

स्कूल आकि मिडिल स्कूलमे शिक्षक बनब। एम.ए. पास केलाक बाद जखन श्यामबाबूकेँ पाँच बरख तक बेरोजगारीक सामना करए पड़लैन तखन रातुक कोन बात जे दिनोमे सौंसे अकास तरेगन सुझए लगलैन। अन्तमे हारि-थाकिकऽ ऐ विचारपर आबि मन अँटैक गेलैन जे केतौ कोनो नोकरी भेटए।

जखन श्यामबाबू कौलेजेमे पढ़ै छला तही समयमे बिआह भऽ गेल छेलैन। एम.ए. पास केलाक बाद, नोकरी नइ भेने अपने जेते जीवनसँ निराश छला तइसँ बेसी परिवारक, माने मातो-पिताक आ कौलेजमे पढ़ैत पत्नियोक चोट तेना धुमसुर जकाँ पड़ए लगलैन जे अखन तकक जे जीवनक आशा छेलैन ओ राँइ-बाँइ भऽ फुटिकऽ छँहोछित हुअ लगलैन। मुदा किछु दिनक पछाइत मिडिल स्कूलमे शिक्षकक रूपमे नोकरी भेट गेलैन।

अनुराधा बी.ए. केलाक बाद बी.एड. सेहो केलीह। हिनकर पिता कोसी प्रोजेक्टमे किरानी छेलखिन। नोकरिया परिवारमे, खासकऽ सरकारी नोकरी करैबला परिवारमे, एहेन संस्कार पनैपिये जाइए जे परिवारक जे काम-काजी समांग होइ छैथ हुनका नोकरी होइन।

ओना, पूर्वजक चिन्तनधारा छेलैन जे स्वतंत्र रूपमे अप्पन उद्यमो करी आ स्वतंत्र विचारानुसार सामाजिक सरोकार सेहो बना कऽ राखि जीवन-यापन करैत चली। मुदा से सभ या तँ मनेसँ हेरा गेल छैन वा तर पड़ि गेल छैन आकि खियाइत-खियाइत एतेक खिया गेल छैन जे अपने टुटि-टुटि खसि रहल छैन।

महिला आरक्षणक हवा उठल। अनुराधाकेँ अनुकूल हवा भेटलैन, हाइ स्कूलक शिक्षिका बनली। हिनका नोकरीक पछाइत किछु दिन तक लोक श्यामबाबूकेँ दुसबो केलकैन जे अपने मिडिल स्कूलक शिक्षक छी आ पत्नी हाइ स्कूलक छैथ। मुदा नाचारकेँ विचार की.!

ओना, श्यामबाबूकेँ पढ़बैमे, माने विद्यार्थीकेँ पढ़बैमे मनो नहियेँ लगै छैन, मुदा नइ पढ़ेता तँ करता की? मन नइ लगैक कारण छैन जे जखन पढ़िते छला तखने अपना मनमे रोपि नेने छला जे कौलेजमे अध्यापन करब। अइले शुरूहेसँ माने हाइये स्कूलसँ नीक परिश्रम केने छला जइसँ मैट्रिकोमे नीक रिजल्ट भेल छेलैन, बी.ए. ऑनर्सोमे सेहो नीक स्थान प्राप्त केने छला आ एम.ए.मे सेहो नीक स्थान भेटलैन। मुदा जीवनक रौदीमे श्यामबाबूक सभ मेहनत जरि गेलैन। एक तँ ओहुना

मिडिल स्कूलक शिक्षण पद्धति सरल अछिए जइसँ गम्भीर अध्येताकेँ छुछुन लगिते अछि आ तैपर मनोनुकूल काज नइ भेने जीवनमे उदासीपन सेहो अबिते अछि। श्यामोबाबूकेँ सएह भेलैन। जीवनमे उदासीपन एने पढ़बैमे मन नइ लगै छैन। जीवनो तँ जीवन छीहे, जेकरा चलेबाक भार सभकेँ अप्पन-अप्पन अछिए, तइले अर्थक जरूरत पड़िते अछि। तेकर पूर्ति तँ उपार्जनेसँ हएत।

समय आगू मुहेँ ससरैत गेल। श्यामबाबू जीवनक दोसर छोड़पर पहुँच गेला। माने, सेवा निवृत्त होइमे आब मात्र आठ मास बाँकी छैन। लगिचाइत समय देखि सेवा निवृत्तिक पछातिक जीवनक चिन्तन-मनन श्यामबाबूक मनमे उठए लगलैन। उठए ई लगलैन जे अखन जेतेक आमदनी, नोकरीक दरमाहा अछि ओ तँ आठ मासक पछाइत अधिया जाएत। तैसंग बुढ़ापा एने रंग-बिरंगक बरो-बेमारीक आक्रमण हेबे करत, तखन भविष्यमे जीवन केना चलत? ओना, पत्नीक कमाइक आशा मनमे छैन्हे। अपनासँ सात बरख छोट, माने कम उम्रक पत्नी छथिन। अपने सेवा निवृत्तिक पछातियो पत्नीक कमाइ रहबे करतैन।

तीन टा बेटा आ दूटा बेटी श्यामबाबूकेँ छैन। दुनू बेटी जेठ आ तीनू बेटा छोट। दुनू बेटीकेँ मैट्रिक तक पढ़ा बिआह-दानसँ श्यामबाबू निचेन भऽ गेल छैथ। दुनू बेटी सासुर बसै छैन।

तेसर सन्तान, माने जेठ बेटा इंजीनियरिंग केलकैन बाँकी दुनू छोट बेटा कौलेजमे अखन पढ़िये रहल छैन। आइ धरिक जीवनमे श्यामबाबू अप्पन माता-पिताक पार-घाट लगा, परिवार चलबैत बेटीकेँ पढ़ा-लिखा बिआह-दान करैत बेटासभकेँ पढ़ा रहल छैथ। तैसंग परिवारक हिसाबसँ पक्का घर सेहो बना लेलैन। ओना, घरक किछु काज अखन पछुआएले छैन, मुदा रहै-जोकर तँ बनाइये लेलैन अछि।

श्यामबाबूक पिता- रघुवंश जखन मृत्युक करीब एला तखन रंग-रंगक रोगसँ ग्रसित भऽ गेला। तीन साल तक ओछाइन धेला पछाइत ओ मरि गेला। श्यामबाबूक पिताकेँ मुइलाक दू सालक पछाइत माए मुइलखिन। ओना, पिता जकाँ रोग-वियाधिसँ माए ग्रसित नहि भेलखिन मुदा पतिक मुइलाक पछाइत सोग तँ भेबे केलैन। धरतीपर जे जन्म लेलक ओ मरबे करत, ई विचार तँ सभकियो जनितो छैथ, मानितो छैथ आ दिन-

राति बजबो तँ करिते छैथ।

माता-पिताक मृत्युक पछाइत श्यामबाबू नीक जकाँ किरियो-कर्म केलैन आ नीक जकाँ भोज-भात सेहो केलैन। समाजमे जहिना बेटीक बिआह राक्षस जकाँ मुँह बौने ठाढ़ अछि तहिना माता-पिताक मृत्युक पछाइत श्राद्ध-कर्म सेहो अछिए। ओना, श्यामबाबूक अपनो मन मानिते छैन जे माता-पिताक श्राद्ध-कर्म जेतेक नीक जकाँ करब तेतेक नीक सुख-सुविधा दोसर जन्ममे, माने मृत्युक पछातिक जन्ममे भेटबे करतैन। अही विचारसँ श्यामबाबू अप्पन माता-पिताक श्राद्ध-कर्ममे हिय खोलि कऽ खर्च केलैन। खर्च करैमे एते गुण जरूर रहलैन जे आन-आन जकाँ कर्ज-बर्ज नहि भेलैन। मुदा बैंकक खातामे जे पाइ रहैन ओ सभटा निल भऽ गेलैन।

सात-आठ दिनसँ श्यामबाबू भेँट नहि भेल छला तँए भेँट करैले मन उबिया रहल छल। आइ रबि दिन छी तँए श्यामबाबू स्कूलो नहियेँ जेता, यएह सोचि विचार केलौं जे आइये साँझमे हुनका घरेपर जा भेँट करबैन।

सूर्यास्त भऽ गेल छल। अप्पन सभ काज निपटा, माने परिवारक काज सम्हारि श्यामबाबू ऐठाम विदा भेलौं। रास्तामे अनेको तरहक विचार मनमे उठि रहल

छल। सोच-विचार करैत श्यामबाबूक ऐठाम पहुँचलौं। ओ दरबज्जेपर बैसल रहैथ। हुनका देखिते जे अखन तक अपना मनमे छल जे श्यामबाबू बिमार-तिमार ने तँ पड़ि गेल छैथ से सभटा मनसँ हटि गेल। दरबज्जासँ कनी हटले रही कि श्यामबाबू बजला- “रूपलाल, अपनो मनमे होइ छल जे सात-आठ दिनसँ तोरासँ भेँट नइ भेल, तँए जा कऽ भेँट करियह। भने तूँ आबिये गेलह।”

श्यामबाबूक बातो सुनि रहल छेलौं आ नजैर उठा-उठा हुनका चेहरोकेँ देखि रहल छेलौं। हुनकर चेहराक रंग देखि बुझि पड़ल जे भरिसक कोनो चिन्तासँ ग्रसित छैथ। मुदा लगले फेर अपने मन कहलक जे जखन गप-सप्प शुरू हएत तखन तँ सभ बात श्यामबाबू बजबे करता। तँए बिना किछु बजने हुनका लगमे जा कऽ बैसैत बजलौं- “श्यामाबाबू, ऐ बीचमे कए दिनसँ अहाँ भेँट नहि भेल छेलौं तँए मन उबिया रहल छल। हाल-चाल सभ बढ़ियाँ अछि किने?”

श्यामबाबू बजला-

“हँ, अछि तँ सभ ठीके-ठाक, मुदा.?”

‘मुदा’ कहि श्यामबाबू तँ चुप भऽ गेला मुदा अपना

मनमे खुटकए लगल जे ‘मुदा’ कहि किए चुप रहि गेलैथ? विचारकेँ बदलैत बजलौं-

“आब नोकरी तँ लगिचाइये गेल हएत?”

श्यामबाबू बजला-

“आठ महिना बाँकी अछि। सएह सोचि रहल छी जे सेवा निवृत्तिक पछाइत की करब, केना करब.!”

श्यामबाबूक विचारकेँ बहलबैत बजलौं-

“अहाँ तँ अपने होशियार छी। की-केना करब से तँ विचारिये नेने हएब।”

हमर बात सुनि श्यामबाबूक मनमे जेना धक्का लगलैन तहिना बजला-

“रूपलाल, उनटा बसात बहने जहिना प्रकृतिमे विद्रूपता अबैए तहिना अपनो..!”

‘अपनो’ कहि श्यामबाबू फेर चुप रहि गेला। हुनका चुप देखि अपना मनमे भेल जे परिवारमे किछु एहेन जरूर भेलैन अछि जे मुँह खोलिकऽ बजैसँ हिचैक रहला अछि। पुछलयैन-

“की अपनो, श्यामबाबू?”

श्यामबाबूक मन जेना सोगसँ सोगा रहल छेलैन

तहिना बजला-

“रूपलाल, अखन तकक जीवन केहेन रहल अछि से तँ तूँ जनिते छह, मुदा..?”

बजलौं-

“अहाँ जे कहब श्यामबाबू से कि समाजसँ छिपल अछि। माता-पिताक पार-घाट लगबैत अहाँ अप्पन बालो-बच्चाक पार-घाट नीक जकाँ लगाइये लेलौं। अहाँ सन कएटा बेटा गाममे अछि जे अहाँ जकाँ बफादार बनि परिवारक सेवा केने हुअए।”

श्यामबाबू बजला-

“रूपलाल, सभ केलहा पानिमे जा रहल अछि.!”

श्यामबाबूक विचार सुनि मनमे तेतेक जिज्ञासा जगि गेल जे बिनु किछु सोचनहि-विचारनहि मुहसँ निकैल गेल-

“से की श्यामबाबू?”

श्यामबाबू बजला-

“रूपलाल, बजैत लाज होइए मुदा बिनु बजनौं तँ काज नहियेँ चलत तँए कहै छिअ। जेठका बेटा मुँह खोलि कहैए, ‘अहाँ की केलौं? अप्पन कमाइक हिसाब देखा

दिअ.!’ आ तहूसँ अचम्भा तँ ई अछि जे पत्नियो ओकरे समर्थन करै छैथ। आब तोहीं कहह जे ऐ सँ बेसी उनटा बसात केहेन बहत।”

श्यामबाबूक विचार सुनि हृदयमे तेते जोरसँ चोट लागल जे मुँहक बकार मुहेँमे रहि गेल।

❑

शब्द संख्या: 1392, तिथि: 27 अक्टूबर 2024

❑❑❑

❑❑

❑

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल द्वारा रचित पोथी, प्रकाशन वर्ष आ लोकार्पण कर्त्ता..

1. गामक जिनगी (कथा संग्रह- 2009), लोकार्पण- डॉ. कमला चौधरी
2. मौलाएल गाछक फूल (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. रामवतार यादव
3. उत्थान-पतन (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. वीणा ठाकुर
4. जिनगीक जीत (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. मोहन मिश्र
5. मिथिलाक बेटी (नाटक- 2009), लोकार्पण- डॉ. राजेन्द्र विमल
6. तरेगन (प्रेरक कथा संकलन- 2010), लोकार्पण- डॉ. रमानन्द झा 'रमण'
7. जीवन-मरण (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कुमार रामेश्वर लाल दास
8. जीवन संघर्ष (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कथाकार अशोक (श्री अशोक कुमार झा)
9. बजन्ता-बुझन्ता (बीहैन कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अरूण कुमार सिंह (एस.डी.ओ.)
10. शंभुदास (दीर्घ कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- प्रो. सदरे आलम 'गोहर'
11. उलबा चाउर (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह
12. अर्द्धांगिनी (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल
13. सतभैंया पोखैर (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- प्रो. जय प्रकाश साह
14. भकमोड़ (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री नन्द विलास राय
15. नै धाड़ैए (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री गुरुदयाल भ्रमर
16. बड़की बहिन (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह
17. इन्द्रधनुषी अकास (कविता संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामलखन यादव
18. तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री चन्दन कुमार झा
19. राति-दिन (कविता संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल
20. सरिता (कविता संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बालमुकुन्द पाठक
21. गीतांजलि (पद्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अमित मिश्र
22. सुखाएल पोखरिक जाइठ (कविता संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बिपीन कुमार कर्ण
23. कम्प्रोमाइज (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री रामप्रवेश मण्डल
24. झमेलिया बिआह (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री वीरेन्द कुमार यादव
25. रत्नाकर डकैत (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री कीशलय कृष्ण
26. स्वयंवर (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री शम्भु सौरभ

27. पंचवटी (एकांकी संचयन- 2013), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल
28. गामक शकल-सूरत (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री ओम प्रकाश झा
29. लजबिजी (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री श्यामानन्द चौधरी
30. समरथाइक भूत (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु
31. अप्पन-बीरान (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री सच्चिदानन्द 'सचिद'
32. बाल गोपाल (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम कुमार मण्डल
33. रटनी खढ़ (दीर्घ कथा संग्रह) 2014), लोकार्पण- श्री फागुलाल साहु
34. पतझाड़ (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'
35. गढ़ैनगर हाथ (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री कपिलेश्वर राउत
36. अपन मन अपन धन (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. केष्कर ठाकुर
37. उकड़ू समय (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. प्रेम शंकर सिंह
38. मधुमाछी (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'
39. पसेनाक धरम (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. खुशीलाल मण्डल
40. गुड़ा-खुद्दीक रोटी (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. दुर्गा प्रसाद साह
41. फलहार (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. राम अशीष सिंह
42. खसैत गाछ (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. भीम नाथ झा
43. ठूठ गाछ (उपन्यास- 2015), लोकार्पण- श्री कमलेश झा
44. कल्याणी (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्रीमती आशा देवी
45. सतमाए (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मदन प्रसाद साहु
46. समझौता (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मनोज कुमार साहु
47. तामक तमघैल (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री हेम नारायण साहु
48. बीरांगना (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री राजा राम यादव
49. एगच्छा आमक गाछ (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री अमर नाथ झा
50. शुभचिन्तक (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री लक्ष्मी नारायण सिंह
51. गाछपर सँ खसला (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद
52. डभियाएल गाम (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल
53. गुलेती दास (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'
54. मुड़ियाएल घर (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री रघुवीर मोची
55. बीरांगना (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्रीमती मुन्नी कामत
56. स्मृति शेष (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु
57. बेटीक पैरुख (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- बेचन ठाकुर

58. क्रान्तियोग (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल
59. त्रिकालदर्शी (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम लषण राम 'रमण'
60. पैंतीस साल पछुआ गेलौं (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री तुरन्त लाल मण्डल
61. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं (उपन्यास- 2017), लोकार्पण- ई. कमलाकान्त भारती
62. दोहरी हाक (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु
63. सुभिमानी जिनगी (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद
64. देखल दिन (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री महावीर प्रसाद
65. गपक पियाहुल लोक (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री चण्डेश्वर खाँ
66. दिवालीक दीप (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री नीरज नारयण पाण्डेय SDO
67. अप्पन गाम (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव शंकर श्रीनिवास
68. लहसन (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ. कमलकान्त झा
69. पंगु (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर
70. आमक गाछी (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ सुरेन्द्र कुमार सिंह
71. सतबेध (गीत संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री प्रीतम कुमार 'निषाद'
72. खिलतोड़ भूमि (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री कृष्ण कान्त झा
73. चितवनक शिकार (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल
74. चौरस खेतक चौरस उपज (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल
75. समयसँ पहिने चेत किसान (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'
76. भौक (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु
77. गामक आशा टुटि गेल (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'
78. पसेनाक मोल (कथा संग्रह- 2019), लोकाण- श्री लक्ष्मेश्वर राय (विधायक)
79. चुनौती (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री नारायण यादव
80. रहसा चौरी (गीत संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह
81. कृषियोग (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री शैलेन्द्र आनन्द
82. हारल चेहरा जीतल रूप (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. उषा चौधरी
83. रहै जोकर परिवार (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- पं. शशिनाथ झा (कुलपति)
84. कामधेनु (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. धीरेन्द्र कुमार
85. मन मथन (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल
86. अकास गंगा (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु
87. सुचिता (उपन्यास) 2020), लोकार्पण- डॉ. अशोक अविचल
88. कर्ताक रंग कर्मक संग (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. योगानन्द झा

89. गामक सूरत बदैल गेल (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद
90. अन्तिम परीक्षा (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद
91. घरक खर्च (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- प्रो. विद्यानाथ झा
92. मोड़पर (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- प्रो. शंकर झा
93. संकल्प (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री राम कृष्ण परार्थी
94. अन्तिम क्षण (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद
95. नीक ठकान ठकेलौं (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. ज्वालानाथ तेज
96. कुण्ठा (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अशोक
97. पयस्विनी (निबन्ध-प्रबन्ध- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर
98. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास
99. संचरण (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'
100. भरि मन काज (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- ई. शैलैन्द्र मण्डल
101. आएल आशा चलि गेल (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्रीमती शीला मण्डल
102. जीवन दान (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह
103. अप्पन साती (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री शारदा नन्द सिंह
104. साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. विभूती आनन्द
105. नब बनक नब फल (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री हीरेन्द्र कुमार झा
106. सुनयना बेटी (उपन्यास- 2023), लोकार्पण- डॉ. कमल कान्त झा
107. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. धनाकर ठाकुर
108. बासभूमि (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. महेन्द्र नारायण राम
109. टकुआटान (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री राम नरेश यादव
110. एकलव्यपन (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री चन्द्रेश
111. एक चुटकी खुशी (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री झौली पासवान
112. नियति आ पुरुषार्थ (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री मुकेश दत्त, श्री नवरत्न वेंगानी
113. श्रद्धा (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- मो. गुल हसन, श्री अजय कुमार दास 'पिन्टुजी'
114. मुक्ति (बाल कथा संग्रह- 2024), डॉ. कमला कान्त भण्डारी
115. प्रकृतिस्थ (बाल कथा संग्रह- 2024), प्रो. नारायण झा
116. समाजक ऐना (बाल कथा संग्रह- 2024), श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र
117. अप्पन सेवा अपने हाथ (बाल कथा संग्रह-2024), लोकार्पण- डॉ. महेन्द्र नारायण राम
118. अठहत्तरिम स्वतंत्रता दिस (कथा संग्रह- 2024), लोकार्पण- श्री राम चन्द्र राय
119. सहोदर भाय (कथा संग्रह- 2024), लोकार्पण- प्रो. बैद्य नाथी राम ❑

जगदीश प्रसाद मण्डलपर केन्द्रित पुस्तक:

120. जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (बायोग्राफी- 2013)- गजेन्द्र ठाकुर, लो.- श्री उमेश पासवान
121. पंचदेव: 1-100 खण्ड (कथा संकलन- 2018)- उमेश मण्डल, लो.- सामूहिक
122. मुक्तपुरुष (शोध आलेख संग्रह- 2021) डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री हरि प्रकाश सुलतानिया
123. हेण्डबुकसँ फेसबुक (विचारशील गद्यांश- 2021)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री प्रहलाद कुमार
124. समस्या सँ समाधान धरि (विचारशील गद्यांश- 2022)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- पं. शशिनाथ झा
125. निर्विकल्प (विचारशील गद्यांश- 2022)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री ब्रह्मानन्द प्रसाद
126. अभ्यन्तर (विचारशील गद्यांश- 2022)- डॉ. उमेश मण्डल, लोकार्पण- श्री शिवनाथ यादव
127. जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (वि. गद्यांश)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- डॉ. दमन कुमार झा
128. जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अ. विश्लेषण)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री राम कृष्ण परार्थी
129. पंगु (हिंदी अनुवाद- 2022)- रामेश्वर प्रसाद मण्डल, लोकार्पण- श्री बैजनाथी राम
130. अन्तर्ध्वनि (कथा संचयन- 2023)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- डॉ. कमल कान्त झा
131. कियो करए आप-ले माए-ले ने बाप-ले (वि. गद्यांश, 2023)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी
132. चौपहल चेहरा (विचारशील गद्यांश- 2023)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री ओम प्रकाश झा
133. स्वातिसुत (विचारशील गद्यांश- 2023)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री अनुप कश्यप
134. JAGDISH PRASAD MANDAL: Maithili Writer- Gajendra Thakur, लो. - राम श्रेष्ठ दीवाना
135. एक सँ एक्कैस (कथा संचयन- 2023)- डॉ. रविन्द्र कुमार चौधरी, लो.- प्रो. मित्रेश्वर अग्निमित्र
136. 15 चयनित कथा (कथा संचयन- 2023)- प्रो. जनक लाल मण्डल, लो.- श्री नन्द विलास राय
137. जगदीश प्रसाद मण्डल: एक जीवनी (जीवनी)- रामेश्वर प्रसाद मण्डल, लोकार्पण- डॉ. कमल कान्त झा
138. दीपवर्तिका (जगदीश प्रसाद मण्डलक आभा-प्रभा, 2023)- डॉ. योगानन्द झा, लो.- डॉ. अशोक कुमार मेहता
139. PANGU (CRITICAL REVIEW, 2024)- Dr. Ram Ashish Singh, लो. - रबीन्द्र नारायण मिश्र
140. पंचदेव: 101 (कथा संचयन- 2024)- डॉ. उमेश मण्डल, लो.- श्री दुर्गानन्द झा (आई.ए.एस.)

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म: मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे, 5 जुलाइ 1947 इस्वीमे भेलैन। शिक्षा: एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र), जीविकोपार्जन: कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती), रुचि: 2001 तक समाज सेवा, रूढ़ि एवम् सामन्ती व्यवहारक खिलाफ लड़ाइ, केस-मोकदमा, जहल यात्रा। 2001 इस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे आगमन। नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि–साहित्यक मौलिक विधामे साएसँ ऊपर पोथीक लेखन-प्रकाशन। सम्मान/पुरस्कार 'विदेह सम्मान- 2011', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', 'वैदेह सम्मान- 2012', 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', 'कौमुदी सम्मान- 2017', 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2017', 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान-2018', 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021', 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार-2022', 'यात्री सम्मान- 2022', 'मिथिला शिखर सम्मान- 2022' तथा 'महाकवि पण्डित लालदास साहित्य गौरव सम्मान- 2023' सँ सम्मानित। **रचना-संसार:** 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा, 38. सुनयना बेटी- उपन्यास। 39. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 40. कल्याणी, 41. सतमाए, 42. समझौता, 43. तामक तमघैल, 44. बीरांगना- एकांकी। 45. तरेगन, 46. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 47. शंभुदास, 48. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 49. गामक जिनगी, 50. अर्द्धांगिनी, 51. सतभैंया पोखैर, 52. गामक शकल-सूरत, 53. अपन मन अपन धन, 54. समरथाइक भूत, 55. अप्पन-बीरान, 56. बाल गोपाल, 57. भकमोड़, 58. उलबा चाउर, 59. पतझाड़, 60. गढ़ैनगर हाथ, 61. लजबिजी, 62. उकड़ू समय, 63. मधुमाछी, 64. पसेनाक धरम, 65. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 66. फलहार, 67. खसैत गाछ, 68. एगच्छा आमक गाछ, 69. शुभचिन्तक, 70. गाछपर सँ खसला, 71. डभियाएल गाम, 72. गुलेती दास, 73. मुड़ियाएल घर, 74. बीरांगना, 75. स्मृति शेष, 76. बेटीक पैरुख, 77. क्रान्तियोग, 78. त्रिकालदर्शी, 79. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 80. दोहरी हाक, 81. सुभिमानी जिनगी, 82. देखल दिन, 83. गपक पियाहुल लोक, 84. दिवालीक दीप, 85. अप्पन गाम, 86. खिलतोड़ भूमि, 87. चितवनक शिकार, 88. चौरस खेतक चौरस उपज, 89. समयसँ पहिने चेत किसान, 90. भौक, 91. गामक आशा टुटि गेल, 92. पसेनाक मोल, 93. कृषियोग, 94. हारल चेहरा जीतल रूप, 95. रहै जोकर परिवार, 96. कर्ताक रंग कर्मक संग, 97. गामक सूरत बदैल गेल, 98. अन्तिम परीक्षा, 99. घरक खर्च, 100. नीक ठकान ठकेलौं, 101. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 102. संचरण, 103. भरि मन काज, 104. आएल आशा चलि गेल, 105. जीवन दान, 106. अप्पन साती, 107. साहित्यकारक विवेक, 108. नब बनक नब फल, 109. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल, 110. बासभूमि, 111. टकुआटान 112. एकलव्यपन, 113. एक चुटकी खुशी, 114. नियति आ पुरुषार्थ, 115. श्रद्धा, 116. मुक्ति, 117. प्रकृतिस्थ 118. समाजक ऐना, 119. अप्पन सेवा अपने हाथ, 120. अठहत्तरिम स्वतंत्रता दिसव, 121. सहोदर भाय, 122. मौन तथा 123. विश्व शान्ति - कथा संग्रह।

Notes